**निमाड़-मालवा प्रवास** शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने कई कार्यक्रमों में दिया आत्मिक उत्थान का मंत्र 3

**छत्तीसगढ़ समाचार** सक्ती और जाँजगीर चाँपा जिलों में हुई नई स्थापनाएँ 4

नवचेतना विस्तार के लिए हुए विशिष्ट यज्ञीय आयोजन 5

**आध्यात्मिक तीर्थ संवाद सत्र** आप भगीरथ बनकर आए हैं, लाखों लोगों को जीने का नया उद्देश्य बताएँगे। -श्रद्धेय डॉ. प्रणव जी 8

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

पाक्षिक

# प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

16 मई 2023

वर्ष : 35, अंक : 22

प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

प्रकाशन तिथि : 12 मई 2023

वार्षिक चंदा : ₹ 80/-

वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 1000/-

प्रति अंक : ₹ 4/-

नारी सशक्तीकरण वर्ष

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23

# गायत्री भारत की राष्ट्रीय उपासना बनकर रहेगी

गायत्री जयन्ती-30 मई 2023

## उपासना से आत्मबल की प्राप्ति

आत्मबल मनुष्य को ईश्वर द्वारा प्रदत्त सर्वोत्तम सम्पदा है। आत्म-कल्याण के लिए जिस प्रकार सांसारिक साधनों की, धन बल, जन बल, शरीर बल, बुद्धि बल आदि की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार आत्मबल भी नितान्त आवश्यक माना गया है। आत्मबल के अभाव में अन्य समस्त बल होने पर भी अपूर्णता ही बनी रहती है। इस अपूर्णता के कारण उसे भीरुता, आशंका, दुश्चिन्ता, भ्रान्ति, दीनता, कायरता, तृष्णा, कामना, वासना, निष्ठुरता, संकीर्णता, दुर्बुद्धि, दुष्प्रवृत्ति आदि अगणित विभीषिकाएँ घेरे रहती हैं। ऐसा व्यक्ति कितने ही अधिक साधनों से सम्पन्न क्यों न हो, अपने को सदा अभावग्रस्त ही अनुभव करेगा और अनेकों आशंकाएँ उसकी आन्तरिक शान्ति को नष्ट करती रहेंगी।

उपासना एक आध्यात्मिक पुरुषार्थ है। आत्मबल की प्राप्त के लिए इसकी प्रबल आवश्यकता होती है। यह मानव जीवन की प्रगति का एक अत्यन्त आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण अंग है। जिस प्रकार मनुष्य को धन, विद्या, स्वास्थ्य आदि की कमी दूर करने के लिए अनेक प्रयत्न-पुरुषार्थ करने पड़ते हैं, उसी प्रकार उसे आत्मबल की पूर्ति के लिए उपासना का अवलम्बन ग्रहण करना पड़ता है। संसार के सभी धर्मों ने, सभी ऋषियों और सभी शास्त्रों ने उपासना को मनुष्य का एक दैनिक एवं अनिवार्य धर्म-कर्त्तव्य माना है।

## सनातन, सर्वोत्तम, सर्वसुलभ गायत्री

गायत्री महाशक्ति की उपासना भारत की प्राचीनतम, सर्वोपरि एवं सर्वानुमोदित सर्वसुलभ प्रक्रिया है। सद्बुद्धि की देवी, आन्तरिक पवित्रता और प्रगति की प्रतीक इस गायत्री उपासना को ही ऋषियों ने, देवताओं ने, अवतारों ने और सभी विचारशील सत्पुरुषों ने अपने दैनिक जीवन में एक आवश्यक धर्मकृत्य के रूप में स्थान दिया था।

जब तक मतमतान्तरों का जंजाल हिन्दू धर्म में प्रविष्ट नहीं हुआ था तब तक सर्वत्र एक ही भाषा, भेष, भाव की तरह उपासना की भी एकता बनी रही। वेद जननी गायत्री को ही ज्ञान-विज्ञान की अजस्र ज्ञानगंगा माना जाता रहा और इसी का नित्य नैमित्तिक अवगाहन करके सब कोई कृतकृत्य होते रहे। पीछे जैसे-जैसे हिन्दू धर्म में विकृतियाँ प्रवेश करती गईं, वैसे-वैसे वेदधर्म की उपेक्षा करके लोग अपनी-अपनी मर्जी के सम्प्रदाय गढ़ते और अपनी-अपनी रुचि के देवताओं का प्रादुर्भाव करते चले गये। अपनी कल्पना और रचना की पुष्टि में उन्होंने अनेक ग्रंथ भी रच डाले। इस प्रकार भ्रान्तियों का एक पूरा घटाटोप खड़ा हो गया। उपासना विधान, देवता, मंत्र आदि आध्यात्मिक उपकरण दिन-दिन बढ़ते गये और उनमें से प्रत्येक के निर्माताओं एवं अनुयायियों ने उनका प्रसार करने के लिए भरपूर महात्म्य बताया, भरपूर ढोल पीटा। यह हंगामा इतना बढ़ा कि सनातन उपासना गायत्री की स्थिति वही हो गई जो नक्कारखाने में तूती की होती है। लोग उसे भूलने ही नहीं लगे, उपेक्षा ही नहीं करने लगे, वरन शाप लगी हुई, कलियुग में निष्फल, केवल ब्राह्मणों को ही अधिकार, कान में कहने की गुप्त विद्या आदि बताकर उसकी ओर से जनसाधारण में अरुचि भी उत्पन्न करने लगे।

## शाश्वत सत्य प्रकट हुआ

भारतीय धर्म की सर्वश्रेष्ठ सनातन उपासना मतमतान्तरों के कोलाहल में कब तक उपेक्षित एवं तिरस्कृत पड़ी रह सकती थी? सत्य की शोध आखिर कभी तो होने ही वाली थी और तथ्यों का प्रकटीकरण किया ही जाने वाला था। हर्ष की बात है कि वह समय अब आ पहुँचा और वास्तविकता जैसे-जैसे सामने आई वैसे-वैसे यह स्पष्ट हुआ कि लाखों वर्षों का हमारा आध्यात्मिक अनुसंधान गायत्री को ही सर्वोपरि उपासना स्वीकार करता रहा है, वही सदा की भाँति आज भी हमारे लिए उपयोगी हो सकती है। जिन्होंने किसी पूर्वाग्रह से अपने को बाँध नहीं लिया है, जिन्होंने विचारशीलता और सत्यान्वेषण से अपने को सर्वथा विमुख नहीं कर लिया है, उन्हें यह मानने में तनिक भी कठिनाई नहीं होती कि आध्यात्मिक प्रगति एवं भावनात्मक एकता की दृष्टि से गायत्री उपासना को ही उपासना क्षेत्र में उसका उचित स्थान मिलना चाहिए। विचारशीलता की प्रचण्ड लहरों ने आज गायत्री को उसके प्राचीन स्थान पर पहुँचा देने का प्रयत्न पुनः आरम्भ कर दिया है। लगता है गायत्री भारत की राष्ट्रीय उपासना बनकर रहेगी और उसका आश्रय लेकर हम अपना आध्यात्मिक, मानसिक, नैतिक और सामाजिक जीवन ही ऊँचा न बनावेंगे, वरन वैयक्तिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सुख शान्ति की चिरस्थायी अभिवृद्धि भी करेंगे।

## सद्बुद्धि, सफलता और सिद्धि दात्री गायत्री

अन्तःकरण में सद्बुद्धि की स्थापना का अत्यधिक महत्व है। जिसे यह विभूति मिल गई, समझना चाहिए कि उसने पारसमणि ही प्राप्त कर ली। शास्त्रकारों ने सद्विचारों को कल्पवृक्ष और सद्भावनाओं को अमृत कहा है। जिसने यह सब प्राप्त कर लिया उसे इस संसार में न तो किसी वस्तु का अभाव रहेगा और न उसकी शान्ति को कोई नष्ट कर सकेगा।

गायत्री साधना का प्रयोजन अन्तःकरण में सद्बुद्धि की स्थापना करना है। इस प्रयोजन के लिए यों स्वाध्याय एवं सत्संग की बहुत महत्ता बताई है, पर उसके साथ-साथ साधना का समावेश होना भी आवश्यक है। साधना को बीज माना जाए तो स्वाध्याय और सत्संग को खाद पानी कहना पड़ेगा। गायत्री को बुद्धि की, ज्ञान की, विवेक की देवी कहा गया है। इस महामन्त्र में तेज और ज्ञान की शक्तियों का आह्वान किया गया है और सच्चे मन से की गई इस साधना से यह दोनों वस्तुएँ मिलती भी देखी जा सकती हैं। सद्बुद्धि की विभूति जैसे-जैसे अपने भीतर बढ़ती है, वैसे ही मनुष्य के गुण, कर्म और स्वभाव में सात्विकता की मात्रा की अभिवृद्धि होती है और इसके फलस्वरूप वह परिस्थितियाँ उत्पन्न होनी आरम्भ हो जाती हैं जिनमें सफलता, सहयोग, समृद्धि, सन्तुष्टि और शान्ति की प्राप्ति हुआ करती है।

गायत्री उपासना से अनेकों प्रकार के भौतिक और आध्यात्मिक लाभ होने का जो महात्म्य शास्त्रों ने कहा है और अनुभव द्वारा जिसे पूर्णतः सही पाया गया है, उसका आधार यह सद्बुद्धि ही है, जिसे गायत्री महामन्त्र के जप, अनुष्ठानों एवं विभिन्न विधि विधानों से प्राप्त किया जाता है। सर्वसाधारण के लिए गायत्री का यह सद्बुद्धि वाला क्षेत्र ही सरल पड़ता है। आरम्भ में हर साधक को इसी कक्षा में प्रवेश करना पड़ता है।

गायत्री उपासना के अगले उच्चस्तरीय चरण में शरीर और मन के विभिन्न केन्द्रों में प्रसुप्त पड़ी हुई अत्यंत महत्वपूर्ण शक्तियों के जागरण का विधान है। दूसरे शब्दों में इसे आत्मबल विकास का विज्ञान कह सकते हैं। जिस प्रकार कीमती तिजोरी में ही मूल्यवान रत्न राशि जमा की जाती है, उसी प्रकार परमात्मा ने मानव प्राणी के भीतर बड़ी चतुरता और सावधानी के साथ कीमती तिजोरियों में भर कर यह अमूल्य रत्न राशि छिपा दी है। छिपाने में उसका प्रयोजन केवल इतना ही है कि वयस्क और परिपक्व बुद्धि होने का प्रमाण देकर ही उसका उपयोग संभव हो सके। यह ठीक भी है। अबोध बालकों की सम्पत्ति उनकी होने पर भी उन्हें नहीं सौंपी जाती। कोई संरक्षक उन पर नियुक्त रहता है। जब बच्चे बड़े, वयस्क और परिपक्व बुद्धि के हो जाते हैं तो उन्हें वह सम्पदा प्रसन्नतापूर्वक दे दी जाती है। परमात्मा के इस संसार में स्थूल और सूक्ष्म प्रकार की अगणित शक्तियाँ बिखरी पड़ी हैं। वैज्ञानिक लोग बाह्य जगत की अनेक शक्तियों को जानने और उनका प्रयोग करने में दत्त-चित्त हो लगे हुए हैं और वे एक से एक महत्वपूर्ण आविष्कार करते चले जा रहे हैं।

हमारे अन्तर्जगत में, चेतना संस्थान में बाह्य जगत की अपेक्षा असंख्यों गुनी शक्तियाँ भरी पड़ी हैं। उनका एक छोटा-सा भी आविष्कार बाह्य जगत में अब तक हुए समस्त आविष्कारों से बढ़कर सिद्ध हो सकता है। आत्मबल इस संसार का सबसे बड़ा बल है। अन्तर्जगत की शक्तियों का महत्व कहने-सुनने से नहीं, वरन अनुभव करने से ही जाना जा सकता है। प्राचीन काल के ऋषि, महर्षि, योगी, यती इस अध्यात्म विज्ञान के ही रत्नों को खोजते रहे हैं। उनने जो कुछ पाया था वह इतना महान था कि उसका इतिहास पढ़ने मात्र से हमारा मस्तक आज की गई गुजरी स्थिति में भी गर्वोन्नत हो जाता है।

लौकिक और पारलौकिक सुख-शान्ति के लिए गायत्री उपासना की उपयोगिता असाधारण है। उसका प्रथम चरण हमें सद्बुद्धि प्रदान करके जीवन की अधिकांश उलझनों को सुलझा देता है और द्वितीय चरण में प्रसुप्त आत्मशक्ति के जागरण का जो रहस्य सन्निहित है, उसके द्वारा मनुष्य नर से नारायण और पुरुष से पुरुषोत्तम बन सकता है। युग-निर्माण की दृष्टि से भी इस आर्ष विज्ञान को हमें अपने जीवन में समुचित स्थान देना ही पड़ेगा। आत्म-विकास की समस्या को हल कर सकना गायत्री उपासना की उपेक्षा करके असंभव नहीं तो कठिन अवश्य रहेगा।

युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी, (अखण्ड ज्योति अक्टूबर 1962, पृष्ठ 5-8 से संकलित, संपादित)

# आप मंत्र जप और प्रार्थना आरंभ कीजिए, गायत्री आपकी भावनाओं में समाहित होती जाएगी

## प्राण स्वरूपा गायत्री ही जीवन और जगत का आधार है। यही मानवी उत्थान का सरल, सर्वोत्तम विधान है

### आद्यशक्ति गायत्री का दर्शन

परम पूज्य गुरुदेव ने गायत्री का विश्वकोश कही जाने वाली अपनी रचना **'गायत्री महाविज्ञान'** के आरंभ में लिखा है :-

पुराणों में वर्णन मिलता है कि सृष्टि के आदिकाल में भगवान (निर्लिप्त, निर्विकार, निर्विकल्प अनादि परमात्म तत्त्व) की नाभि (केन्द्रभूमि) से कमल (ब्रह्म की एक से अनेक होने की स्फुरणा) उत्पन्न हुआ। कमल के पुष्प से ब्रह्मा (सृष्टि निर्माण की त्रिवेदी शक्ति-ब्रह्मा, विष्णु, महेश, अर्थात् उत्पत्ति, स्थिति और नाश का निर्माण कर्त्ता-प्रथम अंश) उत्पन्न हुए।

ब्रह्मा निर्माता हैं। उनसे दो धाराएँ उत्पन्न हुईं- गायत्री (चैतन्य) और सावित्री-प्रकृति (जड़)। चैतन्य की एक स्वतंत्र सृष्टि है, जिसे विश्व का 'प्राणमय कोश' कहते हैं। निखिल विश्व में एक चैतन्य तत्त्व भरा हुआ है, जिसे 'प्राण' नाम से पुकारा जाता है। चैतन्य शक्ति के अंतर्गत सभी जीव आ जाते हैं, जिनमें इच्छा, अनुभूति, संभावना पाई जाती है। विचार, संकल्प, भाव प्राण तत्त्व के तीन वर्ग हैं और सत्, रज, तम यह तीन इसके वर्ण हैं। इन्हीं तत्त्वों को लेकर आत्माओं के सूक्ष्म, कारण और लिंग शरीर बनते हैं। सभी प्रकार के प्राणी इसी प्राण तत्त्व से चैतन्यता एवं जीवन सत्ता प्राप्त करते हैं।

ब्रह्मा जी की चैतन्य शक्ति से चार धाराएँ-चार वेद उत्पन्न हुए। ये हैं- 1.ऋक्-कल्याण (ज्ञान), 2. यजु-पौरुष (कर्म), 3. साम-क्रीड़ा (भाव), 4. अथर्व-अर्थ। यह चारों उस चैतन्य शक्ति के ही स्फुरण हैं, जिन्हें शास्त्रकारों ने **'गायत्री'** नाम से सम्बोधित किया है। गायत्री चारों वेदों की जननी अर्थात् **वेदमाता** है। एक वट बीज के गर्भ में महान वट वृक्ष छिपा होता है। जब वह अंकुर रूप में उगता है, वृक्ष के रूप में बड़ा होता है तो उसमें असंख्य शाखाएँ, टहनियाँ, पत्ते, फूल, फल लद जाते हैं। इन सबका इतना बड़ा विस्तार होता है जो उस मूल वट बीज की अपेक्षा करोड़ों-अरबों गुना बड़ा होता है। गायत्री के चौबीस अक्षर भी ऐसे ही बीज हैं, जो प्रस्फुटित होकर वेदों के महा विस्तार के रूप में अवस्थित होते हैं।

### गायत्री और हम

मनुष्य मूलतः देव स्वरूप और आनन्द स्वरूप है। दुःख और कष्ट तो उसे तब होता है जब वह अपनी वास्तविकता से अनभिज्ञ रहकर उसकी उपेक्षा करता रहता है। हम भूल जाते हैं कि शरीर नहीं, प्राण ही जीवन का आधार है। जब तक प्राण है, तब तक जीवन है या यों कहें कि प्राण चेतना का नाम ही जीवन है। आज हम साँसें भले ही ले रहे हों, लेकिन प्राणों की प्रखरता से जो उमंग, साहस, शौर्य, संकल्प, विश्वास, स्नेह, सद्भाव एक व्यक्ति के भीतर होना चाहिए, वह कहाँ दिखाई देता है? जीवन के अंकुर फूटते जरूर हैं, लेकिन आनंद और उत्साह के, सामर्थ्य और सफलताओं के फल-फूल कहाँ पनपते हैं? हम छोटी-छोटी चुनौतियों और कठिनाइयों से विचलित क्यों हो जाते हैं? परमात्मा ने बीज रूप में हमें वह सामर्थ्य प्रदान की है कि हम स्वयं शानदार जीवन जीते हुए सृष्टि को सुंदर बना सकते हैं, अन्यों का विकास और पोषण कर सकते हैं, लेकिन हम तो अपने भरण-पोषण की चिन्ता में ही सारा जीवन व्यर्थ गँवा देते हैं।

इस अज्ञान, अभाव, अशक्ति का कारण तलाशा जाए तो एक ही बात समझ में आती है कि हमने शरीर को ही सब कुछ मान लिया। प्रधानता आत्मा, अर्थात् प्राण तत्त्व को दी जानी चाहिए थी, लेकिन उसकी उपेक्षा की। गायत्री जीवन का मूल है, यही जीवन और जगत का आधार है। काल के प्रभाव से मनुष्य इस प्राणधारा से विमुख होता चला गया है, इसीलिए पतन-पराभव का सामना कर रहा है। यदि उत्थान की ओर अग्रसर होना है तो आद्यशक्ति गायत्री की शरण में जाना ही होगा।

### गायत्री ही क्यों?

परम पूज्य गुरुदेव गायत्री महाविज्ञान की भूमिका में लिखते हैं :-

गायत्री वह दैवी शक्ति है, जिससे सम्बन्ध स्थापित करके मनुष्य अपने जीवन के विकास के मार्ग में बड़ी सहायता प्राप्त कर सकता है। यह मनुष्य को सद्बुद्धि की प्रेरणा देती है। गायत्री से आत्म-सम्बन्ध स्थापित करने वाले मनुष्य में निरन्तर एक ऐसी सूक्ष्म एवं चैतन्य विद्युत धारा संचरण करने लगती है, जो प्रधानतः मन, बुद्धि, चित्त और अन्तःकरण पर अपना प्रभाव डालती है। बौद्धिक क्षेत्र के अनेकों कुविचारों, असत् संकल्पों, पतनोन्मुख दुर्गुणों का अन्धकार गायत्री रूपी दिव्य प्रकाश के उदय होने से हटने लगता है।

मनोभूमि को स्वस्थ, सतोगुणी, सुव्यवस्थित एवं सन्तुलित बनाने में गायत्री का चमत्कारी लाभ असंदिग्ध है और यह भी स्पष्ट है कि जिसकी मनोभूमि जितने अंशों में सुविकसित है, वह उसी अनुपात में सुखी रहेगा, क्योंकि विचारों से कार्य होते हैं और कार्यों के परिणाम सुख-दुःख के रूप में सामने आते हैं। जिसके विचार उत्तम हैं, वह उत्तम कार्य करेगा, जिसके कार्य उत्तम होंगे, उसके चरणों तले सुख-शान्ति लोटती रहेगी।

हमारे परामर्श एवं पथ-प्रदर्शन में अब तक अनेकों व्यक्तियों ने गायत्री उपासना की है। उन्हें सांसारिक और आत्मिक जो आश्चर्यजनक लाभ हुए हैं, हमने अपनी आँखों से देखे हैं। इसका कारण यही है कि उन्हें दैवी वरदान के रूप में सद्बुद्धि प्राप्त होती है और उसके प्रकाश में उन सब दुर्बलताओं, उलझनों, कठिनाइयों का हल निकल आता है, जो मनुष्य को दीन-हीन, दुःखी, दरिद्र, चिन्तातुर, कुमार्गगामी बनाती हैं। जैसे प्रकाश का न होना ही अन्धकार है, इसी प्रकार सद्ज्ञान का न होना ही दुःख है, अन्यथा परमात्मा की इस पुण्य सृष्टि में दुःख का एक कण भी नहीं है।

### उदाहरण से समझें

ईंधन किसी वाहन का 'प्राण' है और उस पर नियंत्रण रखना 'सद्बुद्धि'। यदि ईंधन न हो तो अच्छे से अच्छा और मँहगे से मँहगा वाहन कहीं पहुँच नहीं सकता। उसी प्रकार यदि वाहन पर चालक का नियंत्रण न हो तो दुर्घटनाएँ होंगी, उसके भीतर की सारी सुविधाएँ किसी काम न आएँगी।

जैसे गायत्री वेदों की माता है, उसी प्रकार वह प्राणि जगत की चेतना का मूल है, शेष सारी चैतन्य धाराएँ उसकी शाखा-प्रशाखाएँ हैं। मनुष्य को यह परम सौभाग्य मिला है कि वह चेतना का विकास कर सकने में सक्षम है, शेष प्राणी मात्र यंत्रवत् ही उसका उपयोग कर सकते हैं।

यह भी सत्य है कि किसी भवन के बुनियादी ढाँचे की मजबूती ही मुख्य होती है। यदि बुनियाद कमजोर हो तो उसकी विशालता, सुंदरता, सज्जा के बावजूद सदा संकट ही बना रहेगा। उसी प्रकार मानव की मूल चेतना कमजोर हो तो अन्य ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ भी सुखदायी नहीं होंगी।

सनातन संस्कृति और अन्य धर्म-सम्प्रदायों में पूजा-उपासना के अनेक विधान हैं, तरह-तरह की ऋद्धि-सिद्धियों को पाने का विधान है, लेकिन गायत्री उपासना से व्यक्तित्व को आत्मबल सम्पन्न नहीं बनाया गया और सद्बुद्धि के अभाव में उनका सदुपयोग नहीं हो सका तो संकट खड़े होने की संभावनाएँ ही अधिक होंगी। आत्मबल के अभाव में संकल्प और साहस उत्पन्न नहीं होते तथा प्रगति क्रम रुका ही रहता है। सद्बुद्धि के अभाव में सदुपयोग न हो तो धन तरह-तरह के व्यसनों को जन्म देता है, बल परपीड़ा और आतंक का कारण बनता है, बुद्धि तरह-तरह के कुचक्र रचने लगती है और यश अहंकार उत्पन्न करता है। इसलिए मानवीय उत्थान की बुनियादी आवश्यकता वह आत्मबल और सद्बुद्धि ही है, जिसकी उपासना सनातन काल से हर मानव गायत्री के रूप में करता रहा है।

### सिद्धात्माओं के अनुभव

प्रायः प्रत्येक ऋषि और महामानव गायत्री का उपासक रहा है। उन्होंने आत्मानुभूति के आधार पर गायत्री का गुणगान किया है।

**महर्षि व्यास** :- सिद्ध की हुई गायत्री कामधेनु के समान है। जिस प्रकार पुष्प का सार शहद, दुग्ध का सार घृत है, उसी प्रकार समस्त वेदों का सार गायत्री है।

**लोकमान्य तिलक** :- जिस बहुमुखी दासता के बंधनों से भारतीय प्रजा जकड़ी हुई है, उसके लिए आत्मा के अन्दर प्रकाश उत्पन्न होना चाहिए, जिससे सत् और असत् का विवेक हो, कुमार्ग को छोड़कर श्रेष्ठ मार्ग पर चलने की प्रेरणा मिले-गायत्री में यही भावना विद्यमान है।

**कवीन्द्र रविन्द्रनाथ टैगोर** :- भारतवर्ष को जगाने वाला जो मंत्र है, वह इतना सरल है कि एक ही श्वास में उसका उच्चारण किया जा सकता है-वह है गायत्री मंत्र।

वर्तमान युग में गायत्री के सिद्ध साधक परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के संरक्षण-मार्गदर्शन में जिसने भी गायत्री उपासना-साधना की है, उसके जीवन में चमत्कारिक बदलाव आए हैं। ऐसे हजारों उदाहरण मिल जाएँगे जिनके जीवन में आमूलचूल परिवर्तन हुए। अलीगढ़ निवासी श्री विनोद शर्मा की तरह सैकड़ों लोग ऐसे हैं, जिनके जीवन में मद्यपान-मांसाहार से लेकर हर प्रकार के दुर्गुण थे, लेकिन गायत्री उपासना के प्रभाव से विचार बदले तो जीवन आमूलचूल बदल गया, उनका घर-संसार स्वर्ग बन गया।

गायत्री उपासना से व्यक्तित्व में विशिष्ट आकर्षण पैदा होता है। ऋषिकेश में वन विभाग की चौकी पर कार्यरत एक नवयुवक ने बताया कि गायत्री उपासना के प्रभाव से उनके कथन का लोगों पर असाधारण प्रभाव पड़ता है। उन्होंने कहा कि मैं लोगों को नशा छोड़ने के लिए वैसे ही कहता हूँ जैसे और लोग, लेकिन जहाँ लोगों को नशा छोड़ना कठिन लगता है, वहीं मेरी बात लोग सरलता से मान जाते हैं।

### सोचें नहीं, आरंभ करें

प्रायः हर व्यक्ति जीवन की समस्याओं के समाधान के लिए संघर्ष करता है। आत्मिक उत्कर्ष की आकांक्षा किसे नहीं होती? ऐसे सभी लोगों को बिना किसी सोच-विचार के अविलंब पूरी श्रद्धा और विश्वास के साथ गायत्री उपासना-प्रार्थना आरंभ कर देनी चाहिए। गायत्री उपासना के प्रभाव से व्यक्तित्व में ऐसा चुंबकत्व विकसित होता जाता है, जिसके प्रभाव से जीवन के दोष-दुर्गुण दूर होते जाते हैं, जीवन में संकल्प उभरते हैं, सत्साहस बढ़ता है और जीवन सतोगुणी होता जाता है। मानवीय उत्कर्ष का यही सर्वोत्तम विधान है।

विधि-विधान से की गई उपासना अधिक फलदायी होती है, लेकिन आरंभ कहीं से भी किया जा सकता है। एक माला नहीं तो कुछ मंत्र जप कीजिए, मंत्र लेखन कीजिए, गायत्री चालीसा-आरती का पाठ कीजिए। गायत्री जयंती पर्व आत्मिक उत्थान की प्रेरणा लेकर आया है। यह ऐसा विशिष्ट अवसर है जिसमें युगऋषि के दिव्य संरक्षण में गायत्री उपासना शीघ्र फलित होती है। आइये! साहसपूर्वक आगे बढ़ें-सबको बतायें, आगे बढ़ायें।

## विदेश प्रवास पर जा रहे परिजनों के लिए
## महत्त्वपूर्ण सूचना-विशिष्ट अवसर

परम पूज्य गुरुदेव और परम वंदनीया माताजी द्वारा स्थापित अखिल विश्व गायत्री परिवार की यह विशिष्टता है कि परिवार के परिजन भारत ही नहीं वरन् विश्व के कोने-कोने में फैले और पहुँचे हुए हैं। कई भारतीय गायत्री परिजन ऐसे भी हैं, जिनके पुत्र-पुत्रियाँ विदेश में अच्छे संस्थानों में कार्यरत हैं और उनके साथ समय व्यतीत करने हेतु उन्हें वहाँ जाने का अवसर मिलता रहता है। उनके हृदय में गुरुसत्ता का कार्य करने की तीव्र आकांक्षा होती है, पर उन्हें वहाँ उपयुक्त सम्बन्धों को ढूँढ़ना कठिन प्रतीत होता है। ऐसे सक्रिय, समर्पित भावनाशील कार्यकर्त्ताओं के लिए युगतीर्थ शान्तिकुञ्ज से एक महत्त्वपूर्ण योजना आरंभ की जा रही है, ताकि उनके सहयोग से विदेश में भी घर-घर तक विचार क्रान्ति की अलख जगाई जा सके।

योजना के प्रथम चरण में ऐसे सभी भावनशील परिजनों से निवेदन है कि वे अपनी निम्न लिखित जानकारियाँ यथाशीघ्र शान्तिकुञ्ज को उपलब्ध करा दें। अपेक्षित जानकारी प्राप्त होने के बाद उनके विदेश प्रवास के समय को केन्द्रीय टोली के साथ ही सम्बद्ध कर दिया जाएगा, ताकि उनके समय एवं प्रवास का समुचित उपयोग हो सके।

**माँगी जा रही जानकारियाँ :**

पूरा नाम ..... जन्म तिथि .....पूरा पता .....मोबाइल नम्बर..... ई-मेल .....
राष्ट्रीयता...., पारिवारिक विवरण...., पुत्र-पुत्रियाँ कहाँ और किस पद पर कार्यरत हैं?.....
मिशन से कब से जुड़े हैं?..., अखण्ड ज्योति, प्रज्ञा अभियान पाक्षिक कब से पढ़ते रहे हैं?
दीक्षा कब ली थी? .....शांतिकुञ्ज प्रथम बार कब आना हुआ था? .....
क्या कभी पहले समयदान किया था? यदि हाँ, तो कब और कहाँ? .....
मिशन सम्बन्धी क्या कर सकते हैं? (यज्ञ कर्मकाण्ड/संस्कार/सम्भाषण/संगीत आदि.... )
कौन कौन सी भाषाएँ बोल सकते हैं?.....
पासपोर्ट संख्या .....पासपोर्ट जारी करने की तिथि .....पासपोर्ट समाप्ति तिथि.....
क्या पहले विदेश गए हैं?..... हाँ / नहीं (यदि हाँ, तो विगत यात्राओं का वर्णन दें। ..... )
उन यात्राओं में यदि मिशन का कुछ कार्य कर पाये हों तो उसकी जानकारी भी प्रदान करें।
अभी कौन-से देश के एक्टिव वीजा हैं? ..... पूर्व में वीजा की वैधता कब तक है?
अगला प्रवास कब और कहाँ का प्रस्तावित है?.....

**उपरोक्त जानकारियाँ पत्र द्वारा श्रद्धेया शैल जीजी, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-249411 (उत्तराखण्ड) के पते पर अथवा ई-मेल provc@dsvv.ac.in द्वारा अथवा व्हाट्सएप- +91 9258360606 पर भेज दें।**

**नोट : यह योजना मात्र उन्हीं परिजनों के लिए है, जिनके पास पूर्व से ही विदेश जाने हेतु वीजा उपलब्ध है।**

# निमाड़-मालवा में शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने दिया आत्मिक उत्थान का मंत्र

रतलाम

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी दिनांक 13 से 15 अप्रैल 2023 की तिथियों में मध्य प्रदेश में निमाड़ और मालवा के प्रवास पर थे। इन तीन दिनों में उन्होंने कई विशाल सम्मेलनों में भाग लेते हुए लाखों लोगों को आत्मिक उत्थान की प्रेरणा दी और महाकाल स्वरूप परम पूज्य गुरुदेव की युग परिवर्तन की योजना में भागीदारी का उत्साह जगाया। सदैव की भाँति विशाल समारोहों में युग संदेश देने के अलावा स्वजनों के बीच पारिवारिक आत्मीयता की अनुभूति कराने में उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी। इन तीन दिनों में वे लगभग 100 कार्यकर्त्ताओं के घर पहुँचे, उनके यहाँ देवस्थापनाएँ कीं। हजारों की संख्या में कार्यकर्त्ताओं से व्यक्तिगत सम्पर्क कर उनकी कुशलक्षेम जानी। आत्मीयता विस्तार का यह क्रम 13 अप्रैल को इन्दौर एअरपोर्ट से ही आरंभ हो गया था, जहाँ सैकड़ों कर्मठ कार्यकर्त्ताओं ने उनका भावभरे हृदय से स्वागत किया।

खाचरोद

## यह भागवत चेतना से जुड़ने का दुर्लभ अवसर

**धामनोद, धार**

प्रथम कार्यक्रम धार जिले के धामनोद नगर में कार्यकर्त्ता गोष्ठी के रूप में सम्पन्न हुआ। आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने शक्तिपीठ पहुँचकर माँ गायत्री और गुरुसत्ता के पावन स्मारक 'प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा' के दर्शन किये। तत्पश्चात् उन्होंने उपस्थित कार्यकर्त्ताओं को संबोधित किया।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने जन्मशताब्दी वर्ष-2026 के लक्ष्य और उससे जुड़ी चुनौतियों का बोध कराया। उन्होंने कहा कि हमें इस अवसर को भागवत् चेतना से जुड़ने के अलौकिक सौभाग्य के रूप में देखना चाहिए। पेट-प्रजनन के लिए तो अनेकों जन्म मिलते हैं, लेकिन मानव जीवन को सार्थक करने वाले ऐसे दुर्लभ अवसर जन्म-जन्मांतरों के पुण्यों से ही मिलते हैं। यह भगवान के खेत में कुछ बोने का समय है, जिसका पुण्य लाभ हमें अनेक जन्मों तक मिलता रहेगा।

इस कार्यक्रम के बाद आदरणीय डॉ. चिन्मय जी सालीटांडा, जिला बड़वानी स्थित वनवासी संत डेमनिया बाबा के आश्रम में आयोजित 24 कुण्डीय यज्ञ में पहुँचे, जिसके मुख्य अतिथि प्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय श्री शिवराज सिंह जी थे। (विस्तृत समाचार गत अंक में प्रकाशित हो चुके हैं।)

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी धामनोद में आयोजित प्रयाज संकल्प गोष्ठी को संबोधित करत हुए

## प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा का लोकार्पण

**बेहरामपुर टेमा, खरगोन। मध्यप्रदेश**

11 से 15 अप्रैल की तिथियों में बेहरामपुर टेमा में 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ एवं प्रज्ञा पुराण कथा का आयोजन हुआ। कार्यक्रम सम्पन्न कराने शान्तिकुञ्ज से श्री दिनेश पटेल की टोली पहुँची थी।

यह कार्यक्रम संस्कार प्रधान था। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने 14 अप्रैल को इस कार्यक्रम में उपस्थित होकर कार्यक्रम की गरिमा में चार चाँद लगा दिए। उन्होंने जीवन में सद्गुरु के महत्त्व पर हृदयस्पर्शी उद्बोधन देते हुए उपस्थित हजारों लोगों के मन-भावनाओं में युग निर्माणी आस्था का जबरदस्त संचार किया। उन्होंने कहा कि हमारे जीवन की गरिमा इस बात पर निर्भर करती है कि हम स्वयं सन्मार्ग पर चलते हुए कितने लोगों को प्रेरणा-प्रकाश दे पाते हैं। लगभग 250 भाई-बहिनों ने दीक्षा ली।

**250 दीक्षा संस्कार हुए**

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने बेहरामपुर टेमा में 'प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा' का लोकार्पण किया। समग्र कार्यक्रम बहुत ही भव्य और अनुशासित थे, जिसकी प्रशंसा शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों ने की।

बेहरामपुर टेमा के 24 कुण्डीय यज्ञ में उमड़ी जनमेदिनी

## सगुर भगुर में शक्तिस्तंभ पर पुष्पांजलि

सगुर भगुर में गायत्री परिवार द्वारा शक्तिस्तंभ का निर्माण कराया गया है। श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी ने अप्रैल, 2007 में इसका लोकार्पण किया था। इस शक्तिस्तंभ में 24 करोड़ हस्तलिखित गायत्री महामंत्रों की प्रतिष्ठा की गई है। आदरणीय डॉ. चिन्मय जी एवं उनके साथी इस शक्तिस्तंभ के दर्शन-पूजन करने सगुर भगुर पहुँचे, क्षेत्रीय कार्यकर्त्ताओं की श्रद्धा-सक्रियता में उत्साहवर्धन किया।

## आत्मिक उत्थान का अत्यंत प्रभावशाली प्रयोग है यज्ञ - डॉ. चिन्मय जी

**खाचरोद, उज्जैन। मध्य प्रदेश**

यज्ञ आत्मिक उत्थान का अत्यंत प्रभावशाली प्रयोग है। व्यक्तित्व दूषित हो तो अंतःकरण के परिमार्जन के लिए यज्ञ जैसे प्रयोग किए जाते हैं। रावण वध के बाद भगवान राम ने 10 अश्वमेध यज्ञ किए, क्योंकि असुर मारा था लकिन असुरता जीवित थी।

यज्ञ के माध्यम से संसार की सारी समस्याओं का उपचार संभव है। यह अवांछनीयताओं के निवारण के लिए कीमोथेरेपी, रेडियोथेरेपी जैसा उपचार है। 108 कुण्डीय यज्ञ के माध्यम से खाचरोद क्षेत्र का शुद्धीकरण होने जा रहा है।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने 14 अप्रैल को यह विचार खाचरोद में आयोजित होने जा रहे 108 कुण्डीय

भूमिपूजन समारोह के मंच पर दीप प्रज्वलन करते आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

### यज्ञ के लिए भूमिपूजन

नवचेतना जागरण गायत्री महायज्ञ के लिए भूमि पूजन और ध्वजारोहण समारोह में व्यक्त किए। उन्होंने वैश्विक वातावरण बदलने के लिए इस शुभ कार्य में भागीदारी का आह्वान लोगों से किया।

इससे पूर्व शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि का मंच पर स्वागत-अभिनंदन किया गया। श्री रवि प्रकाश लंगर ने स्थानीय गायत्री भवन की रजिस्ट्री स्थानीय गायत्री परिवार ट्रस्ट को भेंट की। कार्यक्रम का संचालन शांतिकुंज हरिद्वार से पधारे डॉ. गोपाल शर्मा ने किया आभार श्री संतोष शर्मा ने व्यक्त किया।

**108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ एवं गायत्री शक्तिपीठ का प्राण प्रतिष्ठा समारोह**

## जन-जन के विचार और भावनाओं की शुद्धि का अभियान चलाएँ

**दलोदा सगरा, मंदसौर। मध्य प्रदेश**

मालवा क्षेत्र में भगवान पद्मनाभ के ग्राम दलौदा सगरा में कार्यकर्त्ताओं के जबरदस्त उत्साह और समाज में आध्यात्मिक चेतना के उत्कर्ष के अभिलाषी मंदसौर, नीमच, रतलाम और प्रतापगढ़ जिलों के महामनाओं व कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से एक भव्य गायत्री शक्तिपीठ का निर्माण हुआ है। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने 15 अप्रैल को इसकी प्राण प्रतिष्ठा की। उन्होंने शक्तिपीठ में माँ गायत्री, अम्बाजी, लक्ष्मी जी, गुरुसत्ता के स्मारक प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा के साथ शिव परिवार की प्रतिमाओं की प्राण प्रतिष्ठा की।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने समस्त सहयोगियों के पुरुषार्थ की सराहना करते हुए अपने उद्बोधन में कहा कि गायत्री व्यक्ति की ही नहीं, समष्टि की प्राण चेतना है। इसे समृद्ध किए बिना समाज में सुख-चैन की स्थापना नहीं की जा सकती। इस शक्तिपीठ के माध्यम से हमें जन-जन के विचार, भाव और कर्मों को शुद्ध करने का अभियान चलाने की आवश्यकता है।

दलौदा सगरा में परिजनों के यहाँ देवस्थापना और शक्तिपीठ में महाकाल की प्राण प्रतिष्ठा

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने दो मंजिला शक्तिपीठ के लिए भूमिदान दाता श्री लल्लू प्रसाद पटेल (वकील) का विशेष रूप से सम्मान किया।

प्राण प्रतिष्ठा समारोह 14 से 17 अप्रैल की तिथियों में सम्पन्न हुआ। प्रथम दिन माँ गायत्री, दुर्गा, सरस्वती और भगवान महाकाल की झाँकियों के साथ निकाली गई कलश यात्रा के साथ कार्यक्रम का भव्य शुभारम्भ हुआ। इस कार्यक्रम में ब्रह्म चैतन्य आश्रम के महंत स्वामी महेश चैतन्य जी महाराज, सांसद श्री सुधीर गुप्ता, विधायक श्री यशपाल सिंह सिसोदिया, वरिष्ठ जनप्रतिनिधि श्री नरेन्द्र जी, श्री नानालाल अटौलिया की गरिमामय उपस्थिति रही।

श्री राधेश्याम शर्मा जी के अनुसार महायज्ञ से पूर्व 108 गाँवों में सघन जनसंपर्क कर लाखों लोगों को यज्ञ में भागीदारी का आमंत्रण दिया गया।

**108 कुण्डीय यज्ञ**

## हर मनुष्य के मन-मंदिर में विराजना चाहते हैं भगवान

**कनाडिया, इन्दौर। मध्य प्रदेश**

गायत्री परिवार ट्रस्ट कनाडिया ने दिनांक 12 से 16 अप्रैल 2023 की तिथियों में आयोजित 108 कुंडीय गायत्री महायज्ञ के साथ अपना स्वर्ण जयन्ती महोत्सव मनाया।

1500 कलशों की विशाल शोभायात्रा

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आदरणीय श्री चिन्मय पण्ड्या जी ने इस कार्यक्रम में दीपयज्ञ के अवसर पर युग संदेश देते हुए श्रद्धालुओं को उनके युगधर्म का बोध कराया। उन्होंने कहा कि भगवान भव्य मंदिर में नहीं, बल्कि हर मनुष्य के मन-मंदिर में विराजना चाहते हैं। आज हर व्यक्ति का जीवन अंधकारमय दिखाई देता है। यह अंधियारा एक दीप जलाने से नहीं बल्कि हर व्यक्ति के मन में उत्साह और सद्विचारों के दीप जलाने से दूर होगा। आज घर, परिवार, समाज, देश ऐसे ही अच्छे लोगों की प्रतीक्षा कर रहा है। डॉ. चिन्मय जी ने कहा कि मनुष्य जीवन हीरे जैसा अमूल्य है। इसे छोटे उद्देश्यों में व्यर्थ गँवाने की बजाय संभावनाओं को सौभाग्य में बदलने की आवश्यकता है।

... शेष समाचार पृष्ठ 4 पर

अब आप 01334-311001 पर फोन कर शान्तिकुञ्ज की नई स्वचालित फोन व्यवस्था (आईवीआर) से शान्तिकुञ्ज के विभिन्न विभागों से सीधा सम्पर्क कर सकते हैं।

# छत्तीसगढ़ के सक्ती और जाँजगीर चाँपा जिलों में युग निर्माणी आस्थाओं का पोषण

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी दिनांक 21 एवं 22 अप्रैल 2023 की तिथियों में छत्तीसगढ़ के प्रवास पर पहुँचे। इन दो दिनों में उन्होंने हसौद के 108 कुण्डीय यज्ञ में उपस्थित श्रद्धालुओं को सम्बोधित किया और युग निर्माण आन्दोलन के लिए समर्पित स्थापनाओं का लोकार्पण किया।

प्रवास का शुभारम्भ 21 अप्रैल 2023 को रायपुर एयरपोर्ट से हुआ, जहाँ प्रांतीय संगठन से जुड़े प्रमुख कार्यकर्त्ताओं सहित सैकड़ों कार्यकर्त्ताओं ने देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति जी का भव्य स्वागत किया। दो दिवसीय प्रवास के प्रत्येक कार्यक्रम में दक्षिण पूर्व शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि जोन प्रभारी श्री सुखदेव निर्मलकर, श्री उदयकिशोर मिश्रा, देसंविवि के प्राध्यापक श्री रामावतार पाटीदार, श्री गोपाल शर्मा तथा प्रांतीय जोन समन्वयक श्रीमती आदर्श वर्मा व प्रान्तीय युवा समन्वयक श्री ओमप्रकाश राठौर उपस्थित रहे।

**108 कुण्डीय महायज्ञ, हसौद**

## त्याग और बलिदान का पाठ पढ़ाता है दीपक

**हसौद, सक्ती। छत्तीसगढ़**

18 से 22 अप्रैल की तिथियों में हसौद में 108 कुंडीय गायत्री महायज्ञ का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ। 21 अप्रैल को देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने इस महायज्ञ में पहुँच कर धर्मप्रेमी श्रोताओं की युग निर्माणी आस्था और मिशन के लिए समर्पित कार्यकर्त्ताओं के उत्साह को कई गुना बढ़ा दिया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने दीपयज्ञ के अवसर पर युग संदेश देते हुए कहा कि दीपक हमें स्वयं यज्ञीय जीवन का पाठ पढ़ाता है, वह हमें त्याग और बलिदान करते हुए समाज की सेवा करना सिखाता है। उन्होंने कहा कि जीते तो सभी हैं, लेकिन जीवन उन्हीं का सार्थक है जो दिया और बाती की तरह तिल-तिल कर अपना जीवन समाज के उत्कर्ष के लिए समर्पित करते हैं। इतिहास ऐसे ही साहसी सत्पुरुषों को याद रखता है।

इस अवसर पर कार्यक्रम सम्पन्न कराने पहुँची शान्तिकुञ्ज की टोली सर्वश्री सुनील शर्मा, हेमलाल तत्वदर्शी, छबीराम गढ़िया, सुनील बंशीधर, पुष्कर सिंह राज एवं डॉ. चिन्मय जी के सहयोगी भी उपस्थित थे।

कार्यक्रम संयोजक श्री निर्मल सिन्हा ने बताया कि कई महीनों की तैयारी के परिणाम स्वरूप कार्यक्रम बहुत ही सफल तथा पूरे जिले में नवचेतना का संचार करने वाला रहा। सैकड़ों बहिनों द्वारा निकाली गई कलश यात्रा

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी हसौद के देवमंच से श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए

की शोभा देखते ही बनती थी। इस महायज्ञ में आसपास के कई गाँव से श्रद्धालुओं ने भाग लिया।

दिनांक 22 अप्रैल को आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की उपस्थिति में दीक्षा संस्कार का भावविभोर कर देने वाला कार्यक्रम संपन्न हुआ। डॉ. चिन्मय जी ने कहा कि भगवान राम और कृष्ण जैसी अवतारी चेतना का गुरुरूप में वरण करना जन्म-जन्मांतरों के पुण्यों से ही संभव हो पाता है। यदि हम दीक्षा के अनुबंधों का निष्ठापूर्वक पालन कर सकें तो हमारा जन्म सफल हो जाएगा।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने देव मंच पर हसौद के संयोजक मंडल को शान्तिकुञ्ज के आशीर्वाद स्वरूप परम पूज्य गुरुदेव का साहित्य एवं देव स्थापना का चित्र भेंट किया।

**एक हृदयस्पर्शी प्रसंग**

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी से भेंट करने के लिए गायत्री परिवार के दिव्यांग भाई-बहिन मंच के नीचे प्रतीक्षा कर रहे थे। मंच से उतरते ही डॉ. चिन्मय जी ने उनके साथ बड़ी आत्मीयतापूर्वक भेंट की, गुरुसत्ता के आशीर्वाद स्वरूप उन्हें देव स्थापना का चित्र भेंट किया। इस प्रेम, विनम्रता और शालीनता से दोनों भाई-बहिन अभिभूत हो गए। उनकी आँखें भर आईं।

## श्रीराम स्मृति उपवन का लोकार्पण-वृक्षारोपण

**ओडेकेरा, सक्ती। छत्तीसगढ़**

हसौद के विशाल महायज्ञ के पश्चात आदरणीय डॉक्टर चिन्मय जी ओडेकेरा में श्रीराम स्मृति उपवन का लोकार्पण करने पहुँचे। उन्होंने उपवन में वृक्षारोपण करते हुए लोगों को प्रकृति का पोषण और प्राकृतिक संतुलन स्थापित करने की प्रेरणा दी। श्री अशोक आदित्य जी के अनुसार संक्षिप्त पड़ाव में भी शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि का स्नेहानुदान पाकर सभी कार्यकर्त्ता अभिभूत हो गए।

श्रीराम स्मृति उपवन में वृक्षारोपण करते आद. डॉ. चिन्मय जी

## संस्कार विद्यालय का उद्घाटन

लोकमंगल की भावना के साथ राष्ट्रधर्म निभाएँ शिक्षक -**डॉ. चिन्मय जी**

**जैजैपुर, सक्ती। छत्तीसगढ़**

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने जैजैपुर में संस्कार विद्यालय का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उन्होंने शिक्षक एवं गणमान्यों को सम्बोधित करते हुए कहा कि शिक्षण मात्र पेशा नहीं, धर्म है। सही मायनों में राष्ट्र को गढ़ने की जिम्मेदारी शिक्षकों की ही है। इसी भाव के साथ व्यक्तित्वों को गढ़ने की हमारी सनातन परम्परा रही है। वर्तमान में जब सारा संसार भारत की ओर आशा भरी निगाहों से देख रहा है, तब हमारे देश के शिक्षकों की जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है। हमें अपने विद्यार्थियों को लोकमंगल के भाव के साथ शिक्षित ही नहीं, सद्गुणी एवं संस्कारवान बनाने का लक्ष्य रखना होगा।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी जैजैपुर के गायत्री प्रज्ञा पीठ पहुँचे और मां गायत्री का पूजन कर परिजनों से भेंट की।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी संस्कार विद्यालय के उद्घाटन समारोह को सम्बोधित करते हुए

आरंभ में विद्यालय पहुँचने पर विद्यालय के डायरेक्टर, प्रिंसिपल, स्टाफ सदस्य एवं विद्यार्थियों ने बैंड ध्वनि से शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि का भव्य स्वागत किया। डॉ. चिन्मय जी ने विद्यालय प्रांगण में वृक्षारोपण भी किया।

## बाल संस्कार शाला पचपेड़ी के बच्चों एवं आचार्यों का सम्मान

**पचपेड़ी, धमतरी। छत्तीसगढ़**

आज बचपन और यौवन भटक कर नकारात्मकता, अनैतिकता की ओर बढ़ रहा है, धमतरी जिले में गायत्री परिवार के अनेक कार्यकर्त्ता बाल संस्कार शालाओं का संचालन कर बच्चों को चरित्रवान, ज्ञानवान एवं नैतिक गुणों से सम्पन्न बनाने में संलग्न हैं। गायत्री परिवार भखारा ने इन बाल संस्कार शाला के आचार्यों एवं विद्यार्थियों को हर वर्ष सम्मानित करने का निर्णय लिया है।

भखारा विकास खण्ड के ग्राम पचपेड़ी में श्रीमती बबीता साहू एवं श्रीमती अनुसूईया साहू द्वारा ऐसी ही एक बाल संस्कार शाला चलाई जा रही है, जिसमें 25 विद्यार्थी नियमित रूप से भाग लेते हैं। इन बच्चों का मूल्यांकन कर प्रथम पाँच बच्चों को 500--500 रुपए नकद एवं शेष बच्चों को सांत्वना पुरस्कार दिए गए। दोनों आचार्यों को साड़ी, श्रीफल एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया।

## माता शबरी की तपोभूमि में गायत्री शक्तिपीठ की प्राण प्रतिष्ठा

**शिवरीनारायण, जाँजगीर चाँपा। छ.गढ़**

दिनांक 22 अप्रैल को आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने माता शबरी की तपःस्थली शिवरीनारायण में गायत्री शक्तिपीठ की प्राण प्रतिष्ठा की। इस प्राण प्रतिष्ठा समारोह में उन्होंने माँ गायत्री के साथ शिव परिवार की प्राण प्रतिष्ठा भी की और गुरुसत्ता के पावन स्मारक प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा का अनावरण, प्रथम पूजन किया।

शिवरीनारायण के प्राण प्रतिष्ठा समारोह में हजारों श्रद्धालु बड़े भक्तिभाव के साथ उपस्थित थे। उन्हें सम्बोधित करते हुए शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने कहा कि आज के युग में जन-जन के मनों में से अश्रद्धा और दुर्बुद्धि को दूर करना ही युगधर्म है। आज माता शबरी के वंशज आप सब को माँ गायत्री से यही प्रार्थना करनी चाहिए कि उनकी भक्ति से वह सद्बुद्धि एवं शक्ति प्राप्त हो, जिससे विचार क्रान्ति अभियान को घर-घर पहुँचाकर उन्हें स्वर्ग बनाया जा सके।

आद. डॉ. चिन्मय जी ने शिवरीनारायण में श्रीराम स्मृति उपवन का लोकार्पण भी किया।

आद. डॉ. चिन्मय जी ने शिवरीनारायण के प्रसिद्ध तीर्थ मंदिर के दर्शन भी किए।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी शिवरीनारायण में गायत्री शक्तिपीठ की प्राण प्रतिष्ठा करते हुए तथा श्रीराम स्मृति उपवन का लोकार्पण करते हुए

आरंभ में परिजनों द्वारा आदरणीय डॉ. चिन्मय जी का भव्य स्वागत किया गया। कार्यक्रम सम्पन्न कराने शान्तिकुञ्ज से श्री उदयकिशोर मिश्रा एवं श्री विनय केसरी की टोली उपस्थित थी। प्राण प्रतिष्ठा समारोह के आयोजन में श्रीमती आशा सुल्तानिया जी ने कठिन परिश्रम करते हुए महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

## हर मनुष्य के मन-मंदिर में ...

पृष्ठ 3 से आगे ...

पाँच दिवसीय समारोह का शुभारंभ1500 कलशों की विशाल शोभा यात्रा के साथ हुआ था, जिसमें 5000 बहिनों ने भाग लिया। इसमें 28 राज्यों के पारंपरिक परिधान पहनकर बच्चे शामिल हुए।

कार्यक्रम सम्पन्न कराने शान्तिकुञ्ज से श्री श्याम बिहारी दुबे की टोली पहुँची थी। उन्होंने कहा कि लोग कहते हैं कि जमाना खराब हो रहा है, पर वास्तविकता यह है कि विचार प्रदूषित हो गए हैं। सुखी-समुन्नत समाज के निर्माण के लिए विचार शुद्धि की आवश्यकता है। अरविंद आश्रम की प्रमुख डॉ. सुमन कोचर ने नारी सशक्तीकरण पर उद्बोधन दिया।

महापौर पुष्यमित्र भार्गव, पूर्व जज अनिल पारे, गोलू शुक्ला आदि अनेक गणमान्यों ने यज्ञ में भाग लिया। कार्यक्रम संयोजक श्री शंकरलाल शर्मा, सिद्धार्थ सराठे, जोन प्रभारी श्री राजेश पटेल, उपजोन प्रभारी श्री जेपी यादव, अनिल राव इस ऐतिहासिक यज्ञ की सफलता के प्रमुख शिल्पी रहे।

## कार्यकर्त्ता संगोष्ठी

**रतलाम। मध्य प्रदेश**

तीन दिन के अत्यंत व्यस्त प्रवास में रतलाम व आसपास के परिजनों को भी आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का सान्निध्य लाभ मिला। वहाँ रात्रि विश्राम के समय उन्होंने उपस्थित लगभग 40 प्रमुख कार्यकर्त्ताओं से मुलाकात की, समाचार जाने। इससे पूर्व वयोवृद्ध वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री डी.पी. चौधरी जी ने उनका मंगल तिलक कर स्वागत किया।

**जैसे गन्दे और अस्थिर जल में कोई स्पष्ट प्रतिबिंब दिखाई नहीं देता। उसी प्रकार मलिन और अशांत मन में परमात्मा का दर्शन नहीं हो पाता।**

# नवचेतना विस्तार के विशिष्ट यज्ञीय प्रयोगों को मिल रही है शानदार सफलता

## गढ़वाल मण्डल को जगाती ग्रामतीर्थ यात्रा

**देहरादून उत्तराखंड**

गढ़वाल उपजोन द्वारा गढ़वाल मण्डल के अंतर्गत आने वाले 7 जिलों में दिनांक 10 मार्च से 20 मार्च 2023 की तिथियों में ग्रामतीर्थ जनजागरण यात्रा निकाली गई। इस जनजागरण यात्रा में 51 गाँवों में यज्ञ, दीपयज्ञ, गीत, संगोष्ठी, नुक्कड़ सभा, दीवार लेखन, नशा निवारण रैली जैसे कार्यक्रम आयोजित किए गए। प्रत्येक गाँव में सैकड़ों की संख्या में ग्रामीणों को सुशिक्षित, स्वस्थ, स्वच्छ,

### 11 दिनों में 7 जिलों के 51 गाँवों में चला जनजागरण अभियान

स्वावलंबी, व्यसन कुरीतियों से मुक्त, संस्कार युक्त, समाज के निर्माण के लिए गायत्री परिवार द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रमों की जानकारी दी गई। ग्रामवासियों से इनमें सक्रिय भागीदारी के लिए आह्वान किया गया।

पश्चिमोत्तर जोन प्रभारी शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि प्रो. प्रमोद भटनागर जी ने उपजोन कार्यालय बड़ौंवाला, देहरादून में यात्रा को हरी झंडी दिखाकर इसका शुभारम्भ किया। प्रत्येक गाँव में इसका भरपूर स्वागत हुआ। गाँव-गाँव 'फिर अपने गाँवों को स्वर्ग बनाएँगे, अपने अंदर सोया देवत्व जगाएँगे...' का भाव और उत्साह उभरता दिखाई दिया। उपजोन प्रभारी श्री दिनेश चंद्र मैखुरी ने इस यात्रा का सफल संचालन किया।

## ब्रह्मवादिनी बहिनों द्वारा मिथिलांचल में नारी जागरण का उद्घोष

मधुबनी की चित्रकारी भेंट कर टोली की विदाई करते परिजन और कलश यात्रा के समय मातृशक्ति में उमड़ी श्रद्धा की झाँकी

**मधुबनी। बिहार**

दुर्गा मंदिर प्रांगण उच्च मा. वि. नरार में 8 से 11 अप्रैल की तिथियों में 24 कुण्डीय यज्ञ का विशाल आयोजन सम्पन्न हुआ। नारी सशक्तीकरण का संदेश देने वाले इस महायज्ञ के संचालन के लिए शान्तिकुञ्ज से श्रीमती संध्या तिवारी की टोली पहुँची थी।

प्रथम दिन श्रीफल, आम्र पल्लवों से सजे 1100 पीत कलशों की 5 किलोमीटर लम्बी शोभायात्रा ने मिथिला वासियों का मन मोह लिया। हजारों बहिन-भाइयों ने युग निर्माणी उद्घोष करते हुए नगरवासियों में नई चेतना जगाई व नारी जागरण का प्रभावशाली संदेश दिया।

दूसरे दिन 72 विशिष्ट साधक दम्पतियों द्वारा देवपूजन किया गया। मुख्य यजमान श्री त्रिशूल प्रसाद सिंह सपत्नीक और श्री मनोज प्रसाद सिंह थे। 108 दीक्षा एवं 51 पुंसवन सहित अनेक संस्कार सम्पन्न हुए। बहिनों की टोली के संगीत और युग संदेश से प्रभावित होकर सैकड़ों लोगों के मनों में शान्तिकुञ्ज के दर्शन की उत्कंठा जागी।

दीपयज्ञ में गायत्री शक्तिपीठ जयनगर के

### 108 दीक्षा व 51 पुंसवन संस्कार हुए

ट्रस्टी एवं कार्यक्रम संयोजक श्री अरुण कुमार कामत, जिला युवा समन्वयक श्री सुबोध शास्त्री, दुर्गा पूजा कमेटी के सचिव श्री सजीवन सिंह, सिप्टू सिंह, जितेन्द्र सिंह (मुखिया), गजेन्द्र प्रसाद सिंह, शिव शंकर प्रसाद सिंह, देवेन्द्र प्रसाद चौधरी सहित अनेक गणमान्यों की उपस्थिति रही। वातावरण की दिव्यता से प्रतीत हुआ जैसे पूरा मिथिलांचल महाकाल की जय-जयकार कर रहा है।

## असमियाँ लोगों में बढ़ती युग निर्माणी आस्था

यज्ञ में विश्व मंगल की प्रार्थना करते असमियाँ भाषी श्रद्धालु

**गुवाहाटी। असम**

गायत्री चेतना केन्द्र गुवाहाटी के संचालन में दिनांक 31 मार्च से 2 अप्रैल तक असम के बराखात, झारगाँव, टंगला में तीन दिवसीय 5 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन सम्पन्न हुआ। इनमें ग्रामीण क्षेत्रों से आए शत-प्रतिशत असमियाँ भाषी व बोडो श्रद्धालुओं ने बहुत बड़ी संख्या में बड़े उत्साहपूर्वक भाग लिया।

इन नगरों में यह प्रथम सामूहिक गायत्री यज्ञ का आयोजन था, जो अत्यंत सफल रहा। विद्यारंभ, नामकरण, पुंसवन आदि विभिन्न संस्कार हुए तथा सैकड़ों लोगों ने गायत्री मंत्र की दीक्षा ली। महिला मण्डल, प्रज्ञा मण्डल गठित हुए और असमियाँ अखण्ड ज्योति की सदस्यता का अभियान चलाया गया। कार्यक्रम के बाद भी कई घरों में यज्ञ-दीपयज्ञ व जनसंपर्क का कार्यक्रम चला।

उदालगुड़ी जिले में इन कार्यक्रमों ने अविस्मरणीय छाप छोड़ी। सर्वश्री क्षिरोदेश प्रसाद, जितेंद्र कुमार आनंद, विक्रम तिर्की, सुधांशु देवनाथ और रमेश बक्ति की टोली ने कार्यक्रमों का संचालन किया। उदालगुड़ी जिले के ठाकुरियापारा, श्यामाबाड़ी, अत्रिघाट, बदलापारा, धरमजुली और बक्सा, कुमारीकाटा आदि शाखाओं के कार्यकर्त्ताओं ने सक्रिय भागीदारी की।

## 108 कुण्डीय यज्ञ : 550 दीक्षा व 250 विद्यारंभ संस्कार हुए

**हिलसा, नालंदा। बिहार**

हिलसा अनुमंडल के अंतर्गत दिनांक 8 अप्रैल से 11 अप्रैल 2023 की तिथियों में नालंदा में 108 कुंडीय गायत्री महायज्ञ संपन्न हुआ। हजारों ग्रामीणों ने यज्ञ में बड़ी श्रद्धा के साथ भाग लिया। शान्तिकुञ्ज से आई श्री संदीप पांडे की टोली के कुशल संचालन का प्रभावशाली परिणाम दिखाई दिया। इस यज्ञ में 550 दीक्षा, 250 विद्यारंभ संस्कार तथा बड़ी संख्या में अन्य संस्कार संपन्न हुए।

आशा से कहीं अधिक ग्रामीणों की उपस्थिति रही। सभी शांत चित्त होकर परम पूज्य गुरुदेव के बताए सूत्रों को सुनते रहे। इस यज्ञ में स्थानीय सांसद श्री कौशलेंद्र कुमार, स्थानीय विधायक एवं पूर्व विधायक सहित कई गणमान्य व्यक्ति एवं समाजसेवियों की प्रतिदिन उपस्थिति रही। हिलसा के महिला मंडल एवं युवा मंडल ने बढ़-चढ़कर अपने सेवाभाव का परिचय दिया। श्री महेंद्र प्रसाद एवं

युवा मंडल के भाई रजनीश जी, मंटू जी, पवन जी आदि ने समग्र कार्यक्रम का संयोजन किया।

## विविध धर्मावलम्बियों ने मिलकर थामी विचार क्रान्ति की लाल मशाल

### सर्वधर्म समभाव की प्रेरणा-प्रार्थना के संग सम्पन्न हुआ 1008 दीप महायज्ञ

**गोरखपुर। उत्तर प्रदेश**

गायत्री परिवार रचनात्मक ट्रस्ट गोरखपुर के द्वारा वैष्णवी लान पादरी बाजार में 1008 दीपों से दीप महायज्ञ एवं भजन संध्या का कार्यक्रम आयोजित करते हुए सर्वधर्म समभाव का सशक्त संदेश दिया गया। इस यज्ञ के मुख्य अतिथि महामण्डलेश्वर किकेंश्वरी नंद गिरी एवं सुधा मोदी थे। उनके अलावा डॉ. सत्या पाण्डेय, फादर अजित लारेंन्स, सरदार जसपाल सिंह, श्रवण कुमार भोजवाल, रणविजय सिंह, विजय श्रीवास्तव, डॉ. पी.एन. सिंह, डॉ. एम.पी. सिंह, डॉ. डी.एस. सिंह, आशीष श्रीवास्तव ने विशिष्ट

अतिथि के रूप में उपस्थित होकर सामाजिक एकता व समरसता को बल दिया।

समस्त गणमान्यों ने परस्पर एकता और भाईचारे को बढ़ाने का संदेश दिया। डॉ. सत्या पाण्डेय ने कहा कि परम पूज्य गुरुदेव के सिद्धांतों एवं आदर्शों को जीवन में उतारा जाए तो निश्चित ही भारत पुनः विश्वगुरु बनकर रहेगा। महिला मण्डल समन्वयक सुश्री तारा श्रीवास्तव ने स्वस्थ सामाजिक प्रगति के लिए नारी जागरण सम्बन्धी विचार रखे। डॉ. पी एन सिंह ने सामाजिक सद्भाव बढ़ाने के लिए संस्कारों की पुण्य परम्परा को प्रोत्साहित करने का आह्वान किया।

सर्वश्री शैलेन्द्र कुमार, पं. प्रेम प्रकाश मिश्र, रोहित निराला, कैलाश नाथ, संजय कुमार की टीम ने सरस भजन संध्या सहित दीपयज्ञ सम्पन्न कराया। कार्यक्रम का संचालन अधिवक्ता श्री प्रशांत श्रीवास्तव ने किया। श्री दीना नाथ सिंह ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

## हनुमान जयन्ती पर 501 दीप महायज्ञ

**वाराणसी। उत्तर प्रदेश** : हनुमान जयन्ती के दिन केन्द्रीय देव दीपावली महासमिति वाराणसी के मार्गदर्शन एवं गायत्री परिवार रचनात्मक ट्रस्ट वाराणसी के संयोजन में हठीले हनुमान जी, खिड़किया घाट पर हनुमान जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस क्रम में सायंकाल सामूहिक सुन्दर काण्ड का पाठ हुआ, जिसके समापन पर 501 दीपकों से युक्त भव्य दीपयज्ञ किया गया। सभी श्रद्धालुओं ने सस्वर गायत्री मंत्र एवं सूर्य गायत्री महामंत्र से बल, बुद्धि, विद्या की कामना के साथ आहुतियाँ प्रदान कीं।

## परम सत्ता की सूक्ष्म चेतना में विलीन हुए गुरुकार्य के लिए जीवन अर्पण करने वाले युग निर्माणी

**श्री हनुमान शरण रावत, महोबा। उ.प्रदेश**

अपनी धर्मपत्नी श्रीमती मिथिला रावत, पुत्र विजय रावत (सपरिवार) सहित 25 वर्षों तक शान्तिकुञ्ज के जीवनदानी कार्यकर्त्ता के रूप में सेवाएँ प्रदान करने वाले नैष्ठिक कार्यकर्त्ता श्री हनुमान शरण रावत का दिनांक 4 अप्रैल 2023 को अपने पैत्रिक गाँव कुलपहाड़, जिला महोबा में देहावसान हो गया। वे 86 वर्ष के थे।

स्व. श्री रावत जी सन् 1950 से मिशन से जुड़े और सन् 1958 में मथुरा में सहस्र कुण्डीय यज्ञ में भाग लेने के बाद से पूरी तरह मिशन के लिए समर्पित हो गए। वे पेशे से अंग्रेजी के प्राध्यापक रहे और अधिकांश समय अवैतनिक समयदान करते रहे। सन् 86 में वे अपने परिवार सहित शान्तिकुञ्ज आ गए थे।

**श्रीमती मूर्ति देवी, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार**

शान्तिकुञ्ज की समर्पित कार्यकर्त्ता श्रीमती मूर्ति देवी, धर्मपत्नी श्री शिवपूजन सिंह पटेल 18 अप्रैल को पावन गुरुसत्ता की सूक्ष्म चेतना में विलिन हो गयीं। वे 84 वर्ष की थी। श्री शिवपूजन जी ने पहले सपत्नीक मथुरा में समयदान दिया, फिर सन् 1978 से शान्तिकुञ्ज के जीवनदानी कार्यकर्त्ता बन गए। उनके दोनों पुत्र श्री भीष्म प्रताप सिंह पटेल एवं श्री कमल सिंह पटेल और पौत्र श्री शचीन्द्र सिंह पटेल पूर्ण समर्पित भाव से मिशन को अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं।

**श्री भगवान दास पाटीदार, बुरहानपुर। म.प्र.**

शान्तिकुञ्ज में लगभग 35 वर्षों तक जीवनदानी कार्यकर्त्ता के रूप में सेवाएँ प्रदान करने वाले वयोवृद्ध श्री भगवान दास पाटीदार जी का 26 अप्रैल 2023 को बुरहानपुर में देवलोक गमन हो गया। वे सन् 1987 में एमपीईबी की नौकरी से त्यागपत्र देकर शान्तिकुञ्ज आ गए थे। स्व. श्री भगवान दास पाटीदार जी एक कुशल चित्रकार थे। यहाँ उन्होंने मुख्य रूप से लेखा विभाग में तथा पेंटिंग विभाग में अपनी सेवाएँ प्रदान कीं।

**श्री दधिवल प्रसाद द्विवेदी, रीवा। मध्य प्रदेश**

मिशन के अत्यंत प्राणवान कार्यकर्त्ता और सेवा निवृत्त शिक्षक, ग्राम खड्डा, पोस्ट सिमरिया निवासी श्री दधिवल प्रसाद द्विवेदी का 88 वर्ष की उम्र में दिनांक 14 मार्च 2023 को देहावसान हो गया। इस उम्र में भी मिशन के कार्यों में वे पूरी निष्ठा से तत्पर थे। दीवार लेखन और विद्यालयों में कार्यक्रम उनकी विशेषता थी। उन्होंने 10 से 13 मार्च 2023 की तिथियों में रीवा में सम्पन्न 108 कुंडीय गायत्री महायज्ञ में अपना अविस्मरणीय योगदान दिया, कई गाँवों में दीवार लेखन किया। अपने आदर्श जीवन की अविस्मरणीय छाप लोगों के मन में छोड़ते हुए महायज्ञ की पूर्णाहुति के अगले दिन उन्होंने अपनी जीवन लीला भी पूर्ण कर ली।

**मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है। वह अपने विचार, निश्चय और लक्ष्य को पाने की तत्परता के आधार पर अपने लिए अवसर और परिस्थितियों का निर्माण करता रहता है।**

# रंग ला रही है नारी शक्ति की कर्मठता, फल-फूल रही है गर्भ संस्कार की परम्परा

## पूर्वांचल के 8 जिलों का तीन दिवसीय प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर

**आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी उत्तर प्रदेश**

**सुल्तानपुर। उत्तर प्रदेश**

दिनांक 31 मार्च से 2 अप्रैल 2023 की तिथियों में सुल्तानपुर में आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ। इसमें सुल्तानपुर, अमेठी, प्रतापगढ़, रायबरेली, अयोध्या, अंबेडकरनगर, गाजीपुर, जौनपुर जिलों से आई 160 कार्यकर्त्ता बहिनों ने भागीदारी की। सुल्तानपुर के सीएमओ ने मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित होकर सभी को अनुग्रहीत किया।

प्रांतीय समन्वयक डॉ. संगीता सारस्वत, श्रीमती अर्चना वर्मा, श्रीमती सुमित्रा श्रीवास्तव, श्रीमती प्रज्ञा सक्सेना, श्रीमती नीरू तिवारी एवं श्रीमती सुरभि श्रीवास्तव ने अलग-अलग विषयों पर उद्बोधन दिये और प्रायोगिक क्रियाएँ कराईं। प्रतिभागियों को यह शिविर इतना अच्छा लगा कि उन्होंने विविध विषयों की अधिक जानकारी के लिए तथा अन्य लोगों को भी इसमें शामिल कराने के लिए ऑनलाइन प्रशिक्षण में शामिल होने की इच्छा व्यक्ति की।

नवजीवन हॉस्पिटल(कार्यक्रम स्थल)

**विशेषता** : गायत्री परिवार के वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं ने अपनी बहुओं और बेटियों को भी प्रशिक्षण में शामिल कराया, जिन्होंने अपने मिशन के इस अभियान को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया।

प्रशिक्षण शिविर को सम्बोधित कर रही डॉ. संगीता सारस्वत जी

की डॉ. छवि ओझा व डॉक्टर रमेश ओझा तथा शरण नर्सिंग होम की डॉ. नूपुर जी ने उपस्थित होकर कार्यक्रम की सराहना की और आयोजकों का उत्साहवर्धन किया।

**महाविद्यालय में** : डॉ. संगीता सारस्वत ने गोमती पैरामेडिकल नर्सिंग कॉलेज, सुल्तानपुर में सभी छात्राओं और उपस्थित शिक्षकों को सम्बोधित करते हुए उन्हें गर्भोत्सव का ज्ञान-विज्ञान समझाया। कॉलेज के अधिकारियों ने इस प्रोजेक्ट की भूरि-भूरि प्रशंसा की और शान्तिकुञ्ज दर्शन की इच्छा भी व्यक्त की।

## कानपुर में तीन दिवसीय प्रशिक्षक प्रशिक्षण सत्र

**कानपुर। उत्तर प्रदेश**

आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी उत्तर प्रदेश ने एक प्रशिक्षण शिविर दिनांक 14 अप्रैल से 16 अप्रैल की तिथियों में गायत्री शक्तिपीठ शुक्लागंज में आयोजित किया। इसमें डॉ. संगीता सारस्वत, श्रीमती नीरु तिवारी, श्रीमती आराधना पूठिया, डॉ. शिखा अग्रवाल, सोनाली धनवानी ने मुख्य प्रशिक्षक की भूमिका निभाई।

शिविर का शुभारंभ शक्तिपीठ व्यवस्थापक श्री आर. सी. गुप्ता द्वारा दीप प्रज्वलन से हुआ। डॉ. अमरनाथ सारस्वत ने प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन कर संकल्प दिलाया कि वे अपने क्षेत्र में लौटते ही इस दिशा में कार्य आरंभ कर देंगे। शिविर में कन्नौज, औरैया, फतेहपुर, उन्नाव, शुक्लागंज, कानपुर नगर, कानपुर देहात जिलों के कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

## सुषमा स्वराज पुरस्कार से सम्मानित

**उज्जैन। मध्य प्रदेश**

आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी की उपजोन समन्वयक श्रीमती उर्मिला प्रह्लाद सिंह तोमर को पूरे मध्य प्रदेश में संस्कार एवं संस्कृति की पुनर्स्थापना में अपना सशक्त योगदान देने के लिए माननीय उच्च शिक्षा मंत्री श्री मोहन यादव द्वारा सुषमा स्वराज पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष माया नारोलिया, नगर निगम सभापति शीला यादव, पूर्व महापौर मीना जूनवाल, शहर अध्यक्ष प्रमिला यादव, सचिव प्रियंका सेंगर एवं गायत्री परिवार की बहिन दीपिका सोलंकी, उर्मिला जोशी, ममता निगम के साथ सैकड़ों की संख्या में मातृशक्ति उपस्थित रही।

**श्रीमती उर्मिला तोमर को संस्कार एवं संस्कृति की पुनर्स्थापना में योगदान के लिए मिला सम्मान**

## सभी आरोग्य केंद्रों की आशा वर्कर्स लाभान्वित

महापालिका आयुक्त श्री विजय सनेर का सम्मान करते गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ता

**धुले। महाराष्ट्र** : गायत्री प्रज्ञापीठ धुले में दिनांक 19 अप्रैल को एक कार्यशाला आयोजित हुई। गायत्री परिवार की महिला कार्यकर्त्ताओं के साथ धुले महापालिका के अन्तर्गत सभी आरोग्य केंद्र की आशा वर्कर्स महिला सेविकाओं ने इसमें भाग लिया।

यह कार्यशाला श्रीमती सुरेखा अग्रवाल, जिला समन्वयक आओ गढ़ें संस्कारवान पीढी धुले के नेतृत्व में सम्पन्न हुई। गायत्री परिवार की प्राध्यापक श्रीमती रेखा भगत (शिरपुर) ने अत्यंत सरल और सटीक उदाहरणों के साथ गर्भ विज्ञान तथा गर्भावस्था में बच्चे के शारीरिक-मानसिक विकास पर महत्त्वपूर्ण जानकारी दी। महापालिका आयुक्त श्री विजय सनेर ने इस कार्यक्रम की बहुत प्रशंसा की और अपने पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

## मिल रहे हैं बदलते समाज के उत्साहवर्धक संकेत

## साप्ताहिक वृक्षारोपण का 250वाँ सप्ताह

वृक्षारोपण एवं दीपयज्ञ के संग अविस्मरणीय सफलता का उत्सव मनाते परिजन

**अहमदाबाद। गुजरात**

दिनांक 9 अप्रैल 2023 को गायत्री परिवार यूथ ग्रुप अहमदाबाद ने अपने सतत साप्ताहिक रविवारीय वृक्षारोपण अभियान का 250वाँ कार्यक्रम सम्पन्न किया। इसमें 100 से अधिक तुलसी के पौधे बाँटे गए और एक अशोक की पौध सहित 5 पौधों का रोपण किया गया। कार्यक्रम में बहुत-से लोगों ने भाग लिया। उन्होंने वहाँ लगाए गए साहित्य स्टॉल का लाभ भी लिया।

## गायत्री विद्यापीठ में 'दन्त सुरक्षा' पर कार्यशाला एवं निःशुल्क जाँच शिविर

**राजनांदगाँव। छत्तीसगढ़**

गायत्री विद्यापीठ राजनांदगाँव ने पहली से पाँचवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों के लिए दंत सुरक्षा पर कार्यशाला एवं निःशुल्क जाँच शिविर का आयोजन किया। बच्चों को मुख्य रूप से डॉ.अनिरूद्ध गाँधी, डॉ.मंजरी गाँधी, डॉ. सुरभि गाँधी का विशेष मार्गदर्शन मिला, जिन्होंने विभिन्न संसाधनों के माध्यम से उन्हें दन्त सुरक्षा के विषय पर बहुत ही प्रभावी ढंग से महत्वपूर्ण जानकारियाँ दीं। उन्होंने कक्षा एक से 5वीं तक के बच्चों के दाँतों का निःशुल्क परीक्षण भी किया।

शाला की व्याख्याता श्रीमती उषा झा ने बताया कि कार्यशाला में बच्चों को टूथब्रश कब बदलना चाहिए? दातुन लाभदायक है या हानिकारक? जैसी जानकारियाँ दी गईं। जिन बच्चों में दांतों की सुरक्षा संबंधी कमियाँ थीं, उन्हें उचित सावधानी बरतने का सुझाव डॉक्टरों ने दिया। बच्चों को दाँतों के साथ पूरे शरीर की नियमित साफ-सफाई हेतु भी प्रेरित किया गया। शाला की प्राचार्य श्रीमती वत्सला अय्यर, उप प्राचार्य श्रीमती रश्मि ठाकुर और शिक्षकगण कार्यशाला में उपस्थित रहे।

## सदियों से चल रही बलि प्रथा बन्द हुई

**दुमका। झारखण्ड**

सरैयाहाट प्रखंड के अंतर्गत ग्राम ऊपर चकेवा में स्थित माँ काली मंदिर में प्रत्येक चैती पूजा के उपलक्ष में पशुबलि देने की परंपरा रही है। माँ गायत्री एवं परम पूज्य गुरुदेव की असीम अनुकंपा और स्थानीय कार्यकर्त्ताओं के अथक परिश्रम व सत्प्रेरणा से इस वर्ष यह रूढ़िवादी परम्परा टूटी। यह कार्यक्रम दिनांक 7 अप्रैल 2023 को संध्या समय दीप यज्ञ तथा 8 अप्रैल को सुबह पाँच कुंडीय यज्ञ के साथ माँ काली का पूजन कर संपन्न किया गया। इस ऐतिहासिक सफलता में ग्राम ऊपर चकेवा के परिजन श्री बजरंगबली कुमार, लक्ष्मण कुमार, अनिल कुमार, दीनदयाल मांझी, राजेंद्र पुलिस अरहक आदि सभी का भावभरा सहयोग रहा।

**24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ**

## दो सौ से अधिक लोगों ने लिए नेत्रदान के संकल्प

**बड़नगर, उज्जैन। मध्य प्रदेश**

9 से 12 अप्रैल की तिथियों में बड़नगर में ग्राम खेड़ा माधव में प्रथम बार 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ संपन्न हुआ। ग्रामीण परिवेश में आयोजित इस महायज्ञ में विभिन्न संस्कारों के अलावा 200 से अधिक लोगों ने नेत्रदान के संकल्प लिए। जिला समन्वयक श्री देवेंद्र कुमार श्रीवास्तव के अनुसार यह सफलता यज्ञ आयोजन समिति के सदस्य एवं बड़नगर गीता भवन के नेत्रदान अभियान के संयोजक डॉ. ददरवाल जी के विशेष प्रयास से मिली।

## अपोलो हॉस्पिटल, बिलासपुर में संगोष्ठी

**बिलासपुर। छत्तीसगढ**

दिनांक 12 अप्रैल को अपोलो हॉस्पिटल, बिलासपुर में गायनेकोलॉजिस्ट डॉ. रश्मि तिवारी एवं उनकी टीम के द्वारा गायत्री परिवार शाखा बिलासपुर के सहयोग से 'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' के सन्दर्भ में संगोष्ठी का आयोजन हुआ। इसे संबोधित करते हुए डॉ. रश्मि तिवारी, डॉ. सुशील कुमार एवं डॉ. इंद्रा मिश्रा ने गर्भवती के आहार-विहार, जीवन शैली, स्वास्थ्य, टीकाकरण जैसे अनेक विषयों पर मार्गदर्शन किया और गर्भावस्था में आने वाली अनेक समस्याओं के समाधान सुझाये।

गायत्री परिवार की ओर से डॉ. प्रियंका नेताम, डॉ. इंदु सक्सेना, श्रीमती आकांक्षा वर्मा, श्रीमती योगिता साहू ने गर्भस्थ शिशु को शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ, सुदृढ़ एवं सुसंस्कृत बनाने में उपयोगी अनेक क्रियाओं की जानकारी दी, अभ्यास कराया और विभिन्न माध्यम से समस्त गर्भ विज्ञान समझाया।

इन प्रतिपादनों में युवा कार्यकर्त्ता श्री वेद प्रकाश थवाईत का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम के दौरान अपोलो हॉस्पिटल से डॉ. ऋचा अग्रवाल, डॉ. अरुणिमा मिश्रा, डॉ. धारा, डॉ. मंजू, डॉ. इंदिरा मिश्रा, डॉ. सुशील कुमार एवं सहयोगी स्टाफ की उपस्थिति रही।

## हिमाचल प्रदेश में राज्य स्तरीय संगोष्ठी

**बिलासपुर। हिमाचल प्रदेश**

गायत्री शक्तिपीठ बिलासपुर में 18 अप्रैल के दिन आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी विषय पर संगोष्ठी संपन्न हुई। इसमें भाग ले रही पूरे प्रदेश की 120 कार्यकर्त्ता बहिनों को जिला संयोजक परिवेश शर्मा ने संगोष्ठी का उद्देश्य बताया। उन्होंने आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान को विज्ञान व अध्यात्म के समन्वय से आने वाली पीढ़ी को सच्चरित्र, संस्कारित, ओजस्वी, तेजस्वी बनाने का एक अत्यंत सफल प्रयोग बताया। हिमाचल प्रदेश की महिला मंडल समन्वयक श्रीमती पूर्णिमा ठाकुर ने उन्हें गर्भोत्सव संस्कार के सामूहिक आयोजनों सम्बन्धी जानकारी और उसके विस्तार की प्रेरणा प्रदान की। उन्होंने इसे परम पूज्य गुरुदेव के विचारों को जनजीवन में उतारने का अत्यंत महत्त्वपूर्ण अभियान बताया।

गोष्ठी में भाग ले रही सभी बहिनों ने इस आन्दोलन को जन-जन तक पहुँचाने का संकल्प लिया। सुश्री पुष्पा चौहान ने कहा कि ऐसे प्रशिक्षण परक कार्यक्रम अब जिला स्तर पर आयोजित किए जाएंगे। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती मीतिका शर्मा ने किया।

**शुद्ध भावना और आत्मबल सम्पन्न व्यक्ति सारे संसार से भी अधिक बलवान होता है।**

# संगठन और मिशन की सक्रियता को बल देते सम्मेलन व कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिविर

## युवाओं में मिशन की विरासत को सँभालने का उत्साह और संकल्प उभरा

### विदर्भ क्षेत्र का युवा चिंतन शिविर

**अकोला। महाराष्ट्र**

दिनांक 15 एवं 16 अप्रैल 2023 की तिथियों में अकोला में पूरे विदर्भ क्षेत्र का युवा चिंतन शिविर आयोजित हुआ। महाराष्ट्र जोन युवा प्रकोष्ठ के प्रभारी श्री राजेश टांक के अनुसार गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं के बच्चों को परम पूज्य गुरुदेव की विचारधारा और शान्तिकुञ्ज, देव संस्कृति विश्वविद्यालय और गायत्री परिवार की गतिविधियों से परिचित कराना और उन्हें सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करना आयोजकों का मुख्य लक्ष्य था।

अकोला में युवा चिन्तन शिविर में भाग लेकर उत्साहित हुई मिशन की भावी पीढ़ी

यह शिविर अपेक्षाओं के अनुरूप अत्यंत सफल सिद्ध हुआ। लगभग 250 युवाओं ने इसमें भाग लिया। मुख्य वक्ताओं ने सभी के मनों पर गहरी छाप छोड़ी। योग, ध्यान, यज्ञ, प्रश्नोत्तरी, जिज्ञासाओं का समाधान आदि तरह-तरह की गतिविधियों में युवा ऐसे रमे कि सबको हर पल गायत्री परिवार का सदस्य होने पर गौरव की अनुभूति होने लगी। विदाई के समय सभी ने एक मत से हाथ उठाकर अपने अभिभावकों, वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं को यह आश्वासन दिया कि परम पूज्य गुरुदेव के युग निर्माण आन्दोलन को गति देने का दायित्व वे निष्ठापूर्वक निभाएँगे।

यह कार्यक्रम डॉ. पंजाबराव देशमुख कृषि विद्यापीठ के कृषक भवन में विद्यापीठ के डीन डॉ. प्रकाश नागरे के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। शान्तिकुञ्ज से श्री आशीष सिंह और देव संस्कृति विश्वविद्यालय से डॉ. इप्सित प्रताप सिंह युवाओं के मार्गदर्शन के लिए उपस्थित थे। औरंगाबाद से श्री राजेश टांक तथा मुम्बई से अश्वमेध यज्ञ संयोजक मण्डल के सदस्य डॉ. वरुण मानिक ने उपस्थित होकर अपने विचार और अनुभवों से सभी को लाभान्वित किया। अकोला शाखा के श्री सुरेश कासट, डॉ. गिरीश अग्रवाल, श्री प्रभाकर देशमुख, श्रीमती रत्नमाला गव्हाळे आदि अनेक कार्यकर्त्ताओं ने अपने अथक परिश्रम से युवा सक्रियता का एक नया अध्याय लिखा।

मुख्य अतिथि श्री प्रकाश नागरे ने बताया कि वे बचपन से ही गायत्री मंत्र एवं सूर्य देवता के उपासक रहे हैं, जिसके कारण उच्च पद पर रहकर भी उनमें समाज सेवा की उमंग है। श्री आशीष सिंह ने कहा कि परमात्मा ने मनुष्य जीवन मात्र जीने के लिए नहीं, कुछ बनने और बनाने के लिए दिया है। डॉ. इप्सित सिंह ने मनोविज्ञान पर युवाओं का मार्गदर्शन किया। उन्हें फिजिकल, मेंटल, इमोशनल हैल्थ के लिए गायत्री की साधना की उपयोगिता समझाई।

दो दिनों में अनेक विषयों पर चर्चा हुई। प्रतिभागियों ने अपने अनुभव व संस्मरण भी साझा किए। कार्यक्रम का संचालन सौ. राजश्री काळके तथा आभार प्रदर्शन श्री नितिन वर्गे ने किया।

गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में अपना नाम दर्ज कराने वाली 3 वर्षीया वैदिशा शेरेकर ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अंतर्गत अपनी मधुर वाणी में गीत और गायत्री मंत्र गाकर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

**बच्चों को दी जिम्मेदारी** : इस शिविर में कार्यकर्त्ताओं ने अपने ही बेटे-बहू, बेटी-दामाद को प्रमुख रूप से शामिल किया था।

## अश्वमेध यज्ञ, मुम्बई के लिए संगठित हो रही है तरुणाई

भिवंडी में आयोजित शिविर को सम्बोधित करते शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री सुधीर श्रीपाद

**भिवंडी, ठाणे। महाराष्ट्र**

दिनांक 22 अप्रैल को अश्वमेघ महायज्ञ मुंबई के प्रयाज क्रम में गायत्री प्रज्ञापीठ भिवंडी में एक दिवसीय युवा चेतना शिविर का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत एक ओर युवाओं को युवा जागृति अभियान से परिचित कराया गया, वहीं उन्हें नव निर्माण के रचनात्मक कार्यक्रमों में भागीदारी के लिए संघबद्ध भी किया गया।

शिविर संचालन के लिए शान्तिकुञ्ज से श्री सुधीर श्रीपाद एवं श्री आशीष कुमार सिंह पहुँचे थे। मुंबई से डॉ. वरुण मानेक ने युवाओं को अश्वमेध यज्ञ सम्बंधी मार्गदर्शन प्रदान किया। शिविर के अन्त में अश्वमेध महायज्ञ मुंबई के निमित्त साधना, समयदान और अंशदान के संकल्प लिये गए।

## प्रशिक्षण शिविर में समयदान के संकल्प उभरे

**अलीगढ़। उत्तर प्रदेश**

गायत्री चेतना केन्द्र, सद्भावना नगर, क्यामपुर, अलीगढ़ ने 7 से 11 अप्रैल की तिथियों में कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिविर का आयोजन कर अपने क्षेत्र के कार्यकर्त्ताओं में जनजागरण अभियान को गति देने की उमंग जगाई। 62 भाई-बहिनों ने प्रशिक्षण लिया, सभी ने प्रतिदिन 1-2 घंटे लोकमंगल के लिए समयदान का संकल्प लिया। इनमें से 20 भाई-बहिनों ने पंद्रह दिन से लेकर एक माह समयदान के संकल्प लिए।

श्री रमेश विद्यार्थी और दिनेश कुमार शर्मा द्वारा विविध विधाओं का प्रशिक्षण दिया गया। उपजोन समन्वयक श्री सुखवासी वानप्रस्थी के अनुसार उनकी सरस, हँसमुख शैली ने लोगों को शान्तिकुञ्ज, देसंविवि के प्रति बहुत आकर्षित किया।

**पौड़ी गढ़वाल। उत्तराखण्ड**

ग्राम ऐंठी, तहसील थलीसैंड़ में कार्यकर्त्ताओं ने नवरात्र साधना पर्व के साथ कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिविर भी रखा। इसमें प्रशिक्षित कार्यकर्त्ताओं ने 30-31 मार्च को यज्ञ संचालन करते हुए नवरात्र साधना अनुष्ठान की पूर्णाहुति भी कराई। प्रशिक्षण और यज्ञ दोनों में नशा जैसी कुरीतियों से समाज को मुक्त करने पर विशेष जोर दिया गया। ऐंठी ग्राम की प्रधान श्रीमती रजनी रावत, महिला मंडल अध्यक्ष, श्रीमती रोशनी रावत, ग्राम पंचायत पोखरी के प्रधान श्री मनोज पोखरियाल व गंगाऊँ पंचायत के प्रधान श्री अनिल राज ने यज्ञ में उपस्थित होकर इस प्रकार के प्रशिक्षण और प्रयोगों की सराहना की। उन्होंने अपने गाँवों में भी ऐसा प्रशिक्षण रखने की इच्छा व्यक्त की। शिविर का संचालन श्री हरीश पोखरियाल द्वारा किया गया।

### अखिल विश्व गायत्री परिवार के समस्त परिजनों के लिए

## महत्त्वपूर्ण दिशा-निर्देश

ज्ञात हो कि विगत कुछ वर्षों से अनुशासनहीनता और मिशन विरोधी गतिविधियों के लिए शान्तिकुञ्ज एवं विभिन्न क्षेत्रों के कार्यकर्त्ताओं को शान्तिकुञ्ज द्वारा असम्बद्ध/उपेक्षित किया जा चुका है। देखा गया है कि परिजन अपनी क्षेत्रीयता या व्यक्तिगत परिचय के नाते उन्हें शान्तिकुञ्ज का प्रतिनिधि मानकर विभिन्न कार्यक्रमों में शामिल कर लेते हैं, जो उचित नहीं है। इसे अनुशासनहीनता माना जाएगा।

क्षेत्रीय कार्यक्रमों को सम्पन्न कराने के लिए जो टोली शान्तिकुञ्ज से निर्धारित की जाती है, केवल उन्हें ही शान्तिकुञ्ज का प्रतिनिधि माना जाये। **निजी प्रवास पर पहुँचे शान्तिकुञ्ज वासी अथवा शांतिकुञ्ज से प्रशिक्षित किसी अन्य परिजन को शान्तिकुञ्ज का प्रतिनिधि मानकर कार्यक्रमों या सभा-संगोष्ठियों में शामिल न किया जाए। यदि ऐसा करना चाहते हैं अथवा उनसे कोई कार्यक्रम कराना चाहते हैं तो शांतिकुञ्ज स्थित जोनल कार्यालय को उसकी पूर्व सूचना देकर अनुमति अवश्य प्राप्त कर लें।**

निवेदक - व्यवस्थापक, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार।

## प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थानों में वाङ्मय स्थापना

अम्बालिका इंस्टीट्यूट ऑफ हायर स्टडीज़ एवं प्रज्ञा बालिका इ. कॉलेज में वाङ्मय स्थापना

**लखनऊ। उत्तर प्रदेश**

500 प्रतिष्ठित पुस्तकालयों में वाङ्मय स्थापना के गायत्री ज्ञान मंदिर, इंदिरा नगर के संकल्पित अभियान के अन्तर्गत अब तक 386 पुस्तकालयों में परम पूज्य गुरुदेव का सम्पूर्ण वाङ्मय साहित्य स्थापित किया जा चुका है। अंतिम तीन स्थापनाएँ क्रमशः अम्बालिका इंस्टीट्यूट ऑफ हायर स्टडीज़, मौरावां रोड, मोहनलालगंज लखनऊ में, बाल निकुंज इंग्लिश स्कूल, सेक्टर-ए, अलीगंज, सीतापुर रोड लखनऊ के केन्द्रीय पुस्तकालय में तथा प्रज्ञा बालिका इण्टर कॉलेज, सेमरा चिनहट, लखनऊ में हुईं।

यह साहित्य गायत्री ज्ञान मंदिर के समर्पित कार्यकर्त्ताओं द्वारा अपने पूर्वजों की स्मृति में समारोहपूर्वक स्थापित कराया गया। इस अवसर पर शिक्षण संस्थानों के प्रबंधक, शिक्षक, विद्यार्थी उपस्थित रहे। उन्हें भी अखण्ड ज्योति पत्रिका आदि साहित्य भेंट कर व्यक्तित्व परिष्कार की मार्मिक प्रेरणाओं के साथ युग साहित्य का महत्त्व समझाया गया।

उपरोक्त तीनों शिक्षण संस्थानों में क्रमशः श्री एम.के. निरंजन, श्री हंस जी एवं श्रीमती एल.बी. सिंह ने अपने पूर्वजों की स्मृति में साहित्य भेंट किया है। वाङ्मय भेंट कर्त्ता और गायत्री ज्ञान मंदिर के व्यवस्थापक श्री उमानन्द शर्मा सहित गायत्री परिवार के कुछ वरिष्ठ परिजन समारोह में उपस्थित रहे।

### युग सृजेता समारोह, झाँसी

## 10 हजार नए युवाओं को जोड़ने का है संकल्प

मंच पर मुख्य अतिथि श्री सुरेन्द्र सिंह-दैनिक जागरण के सम्पादक, श्री बिहारी लाल आर्य-पूर्व मंत्री एवं शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि

**झाँसी। उत्तर प्रदेश**

इस वर्ष उत्तर प्रदेश का प्रांतीय युग सृजेता समारोह झाँसी में सम्पन्न होने जा रहा है। इसकी तैयारियों के संदर्भ में 9 अप्रैल को गायत्री शक्तिपीठ आँतिया तालाब पर एक गोष्ठी संपन्न हुई। प्रदेश के 52 जनपदों से आए सैकड़ों परिजनों ने समारोह में 10 हजार युवाओं को जोड़ने का लक्ष्य रखा।

दैनिक जागरण के संपादक श्री सुरेंद्र सिंह गोष्ठी के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने कहा कि युग सृजेता समारोह की तैयारियों को लेकर हो रही पहली गोष्ठी को देख कर ही समारोह की भव्यता का अंदाजा लगाया जा सकता है।

युवा प्रकोष्ठ, शान्तिकुञ्ज के प्रभारी श्री केदार प्रसाद दुबे ने युवाओं की क्षमता और युग निर्माण आन्दोलन में उनकी भूमिका का बोध कराया। उन्होंने कहा कि भारत के युवा विश्व का नेतृत्व करने की क्षमता से लबरेज हैं।

पूर्व राज्य मंत्री श्री बिहारीलाल आर्य ने विश्वास व्यक्त किया कि गायत्री परिवार का यह आन्दोलन समाज में विश्व बंधुत्व की भावना जाग्रत् करेगा।

युवा प्रकोष्ठ, शान्तिकुञ्ज के प्रतिनिधि श्री आशीष कुमार सिंह ने 52 जनपदों से आए लगभग 700 गायत्री परिजनों का मार्गदर्शन करते हुए प्रयाज से लेकर मुख्य समारोह तक की व्यवस्थाओं से जुड़े विभिन्न दायित्वों की जानकारी दी। इससे पूर्व प्रांतीय प्रभारी श्री प्रभाकर सक्सेना ने प्रदेश में चल रही तैयारियों की रूपरेखा प्रस्तुत की।

## अंतर्राष्ट्रीय मैथ्स ओलंपियाड प्रतियोगिता में जीता स्वर्ण पदक

**राजनांदगाँव। छत्तीसगढ़**

नैतिकता और संस्कारपरक शिक्षा के लिए प्रतिष्ठित गायत्री विद्यापीठ, राजनांदगाँव के बच्चों ने अंतर्राष्ट्रीय मैथ्स ओलंपियाड 2022-23 में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए अपने विद्यालय और समस्त गायत्री परिवार को गौरवान्वित किया है। गणित विषय में प्रथम रैंक के साथ गुरविंद साहू, यथार्थ कश्यप, कुमकुम साहू, प्रियल राजा, सौम्य खंडेलवाल, शुभ जैन ने स्वर्ण पदक हासिल किया। साइंस विभाग के प्रमुख व्याख्याता श्री संतू गुप्ता के मार्गदर्शन में बच्चों ने यह सफलता अर्जित की।

श्री दुर्गाशंकर मिश्र, उत्तर प्रदेश के मुख्य सचिव का देव संस्कृति विश्वविद्यालय में उद्बोधन, कहा-

# भारत अपनी सनातन संस्कृति के अनुरूप प्रशासनिक व्यवस्था से ही विश्व का नेतृत्व करने में समर्थ होगा

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी माननीय श्री दुर्गाशंकर मिश्र जी, मुख्य सचिव उत्तर प्रदेश को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के मृत्युंजय सभागार में दिनांक 29 अप्रैल को 'भारतीय परंपरा के अनुरूप प्रशासनिक व्यवस्था' विषय पर व्याख्यान माला का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि माननीय श्री दुर्गाशंकर मिश्र, मुख्य सचिव उत्तर प्रदेश ने इस अवसर पर कहा कि भारत अपनी सनातन संस्कृति के अनुरूप प्रशासनिक व्यवस्थाओं से ही विश्व का नेतृत्व करने में समर्थ बनेगा।

माननीय मुख्य सचिव ने भारत की आजादी के अमृत काल की चर्चा की। उन्होंने देश को सभ्य और विकसित राष्ट्र बनाने में आने वाली शिक्षा, स्वच्छता, सामाजिक समरसता जैसी अनेक चुनौतियों की भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि वे व्यक्ति, समाज और राष्ट्र ही प्रगति करते हैं जो चुनौतियों को स्वीकार करते हैं। चुनौतियों को स्वीकार करने वाले ही डॉक्टर, वैज्ञानिक, प्रशासनिक अधिकारी बन पाते हैं। भगवान श्रीराम, श्रीकृष्ण, बुद्ध, महावीर आदि को जीवन भर चुनौतियों एवं संघर्षों से गुजरना पड़ा है। उन्होंने कहा कि मनुष्य में संकल्प शक्ति हो तो वह हर चुनौती का सामना कर सकता है। परम पूज्य गुरुदेव पं श्रीराम शर्मा आचार्य जी को विशेष रूप से याद करते हुए उन्होंने कहा कि उनके संकल्प और साहसिक पुरुषार्थ से युग निर्माण आन्दोलन की गूँज सारे विश्व में सुनाई देती है।

## देवदर्शन-श्रद्धांजलि

माननीय श्री दुर्गाशंकर मिश्र जी ने वीर शहीदों के स्मारक 'शौर्य की दीवार' पर पुष्पांजलि अर्पित की। उन्होंने प्रज्ञेश्वर महादेव की पूजा अर्चना करते हुए राज्य के सर्वतोमुखी विकास की प्रार्थना की। तत्पश्चात् वे शान्तिकुञ्ज में सन् 1926 से सतत प्रज्वलित सिद्ध ज्योति 'अखण्ड दीप' के दर्शन और ऋषियुग्म की समाधि पर पुष्पांजलि अर्पित करने शान्तिकुञ्ज पधारे।

इससे पूर्व देवसंस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने मुख्य अतिथि का हार्दिक स्वागत किया। अपने उद्बोधन में उन्होंने भारत की अध्यात्म प्रधान प्रशासनिक व्यवस्थाओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि अध्यात्म हमारी अनमोल विरासत है। इस देश के संत, विचारक एवं महापुरुषों ने अपने उदात्त व्यक्तित्व और सर्वहितकारी प्रशासनिक व्यवस्थाओं से भारतीय संस्कृति का गौरव पूरे विश्व में बढ़ाया है।

समारोह के अंत में माननीय प्रतिकुलपति जी ने श्री मिश्र जी को युग साहित्य, स्मृति चिह्न एवं गायत्री मंत्र का उपवस्त्र भेंटकर सम्मानित किया। इस अवसर पर विवि. परिवार तथा शान्तिकुञ्ज के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री शिवप्रसाद मिश्र, डॉ. ओ.पी. शर्मा, कुलसचिव श्री बलदाऊ देवांगन सहित अनेक प्रशासनिक अधिकारी, शिक्षक, विद्यार्थी उपस्थित थे।


**प्रवेश प्रारंभ**

देव संस्कृति विश्वविद्यालय

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त, राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद द्वारा प्रत्यायित एवं आईएसओ 9001 : 2015 एवं 45001 : 2018 द्वारा प्रमाणित

ऑनलाइन आवेदन : www.dsvv.ac.in @dsvvofficial

**परीक्षा केन्द्र** भोपाल (म.प्र) हरिद्वार (उत्तराखण्ड) कोलकाता (प.बंगाल) लखनऊ (उ.प्र) नोएडा (उ.प्र.) नागपुर (महाराष्ट्र) पटना (बिहार) राजनांदगाँव (छ.ग.)

बीएड कार्यक्रम के लिए मात्र देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार ही परीक्षा केन्द्र है।

**स्नातक उपाधि पाठ्यक्रम 4 वर्ष**

| | |
|---|---|
| बी.एससी. | गणित (ऑनर्स) |
| बी.एससी. | योग विज्ञान (ऑनर्स) |
| बी.एससी. | इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी (ऑनर्स) |
| बी.वोक. | 3डी एनीमेशन एण्ड वीएफएक्स (ऑनर्स) |
| बी.सी.ए. | बैचलर ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन (ऑनर्स) |
| बी.ए. | संस्कृत (ऑनर्स) |
| बी.ए. | हिन्दी (ऑनर्स) |
| बी.ए. | अंग्रेजी (ऑनर्स) |
| बी.ए. | इतिहास (ऑनर्स) |
| बी.ए. | मनोविज्ञान (ऑनर्स) |
| बी.ए. | संगीत-गायन (ऑनर्स) |
| बी.बी.ए. | टूरिज्म एण्ड ट्रेव्हल मैनेजमेण्ट (ऑनर्स) |
| बी.आर.एस. | बैचलर ऑफ रूरल स्टडीज (ऑनर्स) |
| बी.ए. | पत्रकारिता एवं जनसंचार (ऑनर्स) |
| बी.एड. | बैचलर ऑफ एजुकेशन 2 वर्ष |

**पी.जी. डिप्लोमा पाठ्यक्रम 1 वर्ष**

- पी.जी. डिप्लोमा-मानव चेतना, योग एवं वैकल्पिक चिकित्सा (केवल विदेशी छात्रों हेतु)
- पी.जी. डिप्लोमा-धर्म विज्ञान एवं मनोवैज्ञानिक परामर्श
- पी.जी. डिप्लोमा-गाइडेन्स एण्ड कॉउंसलिंग

**स्नातकोत्तर उपाधि पाठ्यक्रम 2 वर्ष**

| | |
|---|---|
| एम.ए./एम.एससी. | नैदानिक मनोविज्ञान |
| एम.ए./एम.एससी. | मानव चेतना एवं योग विज्ञान |
| एम.ए./एम.एससी. | योग विज्ञान एवं वैकल्पिक चिकित्सा |
| एम.एससी. | योग चिकित्सा |
| एम.एससी. | एप्लाइड मेडिसिनल एवं एरोमेटिक प्लाण्ट साइंसेज |
| एम.सी.ए. | मास्टर ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन (डाटा साइंस) |
| एम.बी.ए. | टूरिज्म एण्ड ट्रेव्हल मैनेजमेण्ट |
| एम.ए. | शिक्षा |
| एम.ए. | पत्रकारिता एवं संचार अध्ययन |
| एम.ए. | इतिहास एवं भारतीय संस्कृति |
| एम.ए. | संस्कृत |
| एम.ए. | संगीत-गायन |
| एम.ए. | संगीत-तबला, पखावज |
| एम.ए. | दर्शनशास्त्र |
| एम.ए. | हिन्दू अध्ययन |

**आवेदन फॉर्म हेतु**

- ऑनलाइन आवेदन-http://www.dsvv.ac.in (₹ 1000/-)
- ऑफलाइन आवेदन-**वेबसाइट से आवेदन पत्रक** डाउनलोड करें एवं भर कर डीडी (₹ 1000/-) के साथ विश्वविद्यालय में जमा करें अथवा विश्वविद्यालय के पते पर भेज सकते हैं। डिमांड ड्राफ्ट **देव संस्कृति विश्वविद्यालय** के नाम पर हरिद्वार में देय होगा।
- प्रत्येक आवेदक एक ही पाठ्यक्रम के लिए आवेदन कर सकता है। **(बीएड के अतिरिक्त)**
- प्रवेश प्रक्रिया एवं अन्य विस्तृत जानकारियाँ विश्वविद्यालय की विवरणिका एवं वेबसाइट पर उपलब्ध हैं।

Apply ONLINE www.dsvv.ac.in Scan for Application

**कुलसचिव** : देव संस्कृति विश्वविद्यालय, गायत्रीकुञ्ज-शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-249411 (उत्तराखण्ड)
**फोन** : (01334) 261367 (Ext.: 5407, 524 **ईमेल** : admissions@dsvv.ac.in
**वेब** : www.dsvv.ac.in **मोबाइल** : +91-9258360763, 9258369877, 9258369612, 9720107192


# मलयालम भाषियों के लिए आध्यात्मिक तीर्थ-संवाद सत्र

## अद्भुत, अविस्मरणीय अनुभूतियों के साथ लौटे 370 शिविरार्थी

गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज में दिनांक 23 से 30 अप्रैल 2023 की तिथियों में 'एक कदम अंतःचेतना की ओर' के भाव के साथ मलयालम भाषा में आध्यात्मिक तीर्थ-संवाद सत्र आयोजित हुआ। इसमें केरल प्रदेश के 370 से अधिक श्रद्धालुओं ने भाग लिया। देश के कई महानगरों एवं दुबई से भी मलयाली परिवार इसमें भाग लेने आए थे। केरल के दो काउंसलर, प्राचार्य, शिक्षक, शिक्षिकाएँ, इंजीनियर, डॉक्टर, वकील, नर्स, व्यापारी, विद्यार्थी एवं सामान्य जनों की भागीदारी हुई। **यह सत्र अत्यंत सुनियोजित एवं कई दृष्टि से अत्यंत विशेष था।**

**व्हॉट्सएप का योगदान** : शिविर संयोजकों में प्रमुख श्री ज्योतिष प्रभाकरन ने अपने व्हॉट्सएप ग्रुपों से जुड़े श्रद्धालु परिजनों को इस आध्यात्मिक सत्र में भाग लेने के लिए प्रेरित किया और सारी व्यवस्थाएँ बनाईं।

**समर्पण-अनुशासन** : सभी प्रतिभागियों को 600 रुपये का मलयाली साहित्य, अखण्ड ज्योति सहित झोला अनिवार्य रूप से दिया गया। अपने कंधों पर इस झोले को लेकर शान्तिकुञ्ज में विचरण करते शिविरार्थी अलग ही दिखाई देते थे। प्रायः सभी ने गायत्री मंत्र की दीक्षा भी ली। सभी अखण्ड ज्योति पत्रिका के सदस्य बने और 10-10 अन्य लोगों को सदस्य बनाने का संकल्प लिया।

परिचय सत्र में युगतीर्थ की दिव्यता और युग निर्माण की विराट योजना की जानकारी पाकर लोग भाव-विभोर हो गए। परिचय सत्र परस्पर प्रेम व आत्मीयता बढ़ाने वाला था।

**नई जानकारियाँ, नया उत्साह** : रुद्राभिषेक का कर्मकाण्ड, गर्भोत्सव की जानकारी, दीपयज्ञ, जन्म दिवस एवं विवाह दिवस संस्कार, मलयालम भाषा में यज्ञ के शिक्षण के लिए किया गया 31 कुण्डीय यज्ञ, सात दिवसीय लघु गायत्री साधना अनुष्ठान की गायत्री यज्ञ के साथ पूर्णाहुति, जनजागृति के लिए मण्डलों का गठन, देव दक्षिणा में दुष्प्रवृति उन्मूलन-सत्प्रवृति संवर्धन का संकल्प, युगतीर्थ में प्रभात फेरी जैसे कार्यक्रम शिविरार्थियों के लिए प्रथम एवं अविस्मरणीय अनुभव थे, सभी गद्गद और उत्साहित हुए।

**पुस्तक विमोचन** : आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने 'जीवन देवता की साधना-आराधना' विषय से अपना विशेष संदेश दिया। उन्होंने डॉ. प्रभा सागर द्वारा लिखी गई महा गायत्री पुस्तक का विमोचन किया।

**श्राद्ध-तर्पण** : 25 अप्रैल को सभी ने सामूहिक पितृ श्राद्ध-तर्पण एवं पिण्डदान कार्यक्रम में भाग लेकर अपने कुल की दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि, जलांजलि अर्पित की।

**तीर्थ दर्शन** : सभी शिविरार्थियों के लिए हरिद्वार दर्शन, देव संस्कृति विश्वविद्यालय एवं ब्रह्मवर्चस भ्रमण की व्यवस्था भी की गई थी।

**जिला समितियों का गठन** : भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के केरल में विस्तार के लिए जनपदीय समितियाँ गठित की गईं।

कालीकट से अखण्ड ज्योति मलयालम पत्रिका के संपादक श्री एम टी विश्वनाथन ने 'भारतीय संस्कृति और शांतिकुंज की भूमिका' पर शिविर को ऑनलाईन सम्बोधित किया।

श्री ज्योतिष प्रभाकरन ने हिंदी में दिए गए उद्बोधनों का मलयालम भाषा में अनुवाद किया। दक्षिण जोन प्रभारी श्री परमानन्द द्विवेदी एवं केरल प्रान्त के प्रभारी प्रतिनिधि श्री उमेश कुमार शर्मा ने सत्र का समन्वय किया। श्रीमती सुमा प्रभाकरण, श्री कुन्नमबात वी प्रसाद, श्री उन्नीकृष्णन, श्री शाजी शर्मा की टीम ने शिविर संचालन में अहम भूमिका निभाई। शान्तिकुञ्ज से श्रीमती प्रशांति शर्मा, सर्वश्री शिवाजी, लोकेश कुमार, श्रीमती हेमा देवी, शिव लाल पाटीदार, गोपाल शर्मा, हरी वल्लभ सोनी, सौदान सिंह, रिथीश कुमार, अनूप कुमार आदि की बड़ी टीम ने व्यवस्थाएँ सँभाली। गायत्री चेतना केन्द्र तिरुवनंतपुरम और कोचीन का इस शिविर के आयोजन में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

श्रद्धेया जीजी और श्रद्धेय डॉक्टर साहब के प्रेम और आत्मीयता भरे शब्दों ने सभी को भाव विभोर कर दिया। उन्होंने कहा कि उत्तर-दक्षिण का यह मिलन ईश्वर की दिव्य आकांक्षा है। आप यहाँ भगीरथ बनकर आए हैं और युगतीर्थ की ज्ञानगंगा का अभिसिंचन कर लाखों लोगों को जीवन जीने का नया उद्देश्य बतायेंगे। गंगा-गायत्री के अभिसिंचन से उनका घर-संसार सुखमय बनाएँगे।


श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। **संपादक**- प्रमोद शर्मा। **पता** :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

**सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ**
**फोन : 01334-311004**
**ईमेल :** pragyaabhiyan@awgp.in
**समाचार भेजने के लिए**
**ई-मेल** : news@awgp.org

**Publication date: 12.05.2023**
**Place: Shantikunj, Haridwar**
**RNI-NO.38653/ 1980**
**Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23**
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23